श्रीरघुबीर

प्रमोदबनबिहार

जिसको

लघुबालकअसमर्थ अनुगामी शिवानन्द ।
नरमात्रके हुजूरमें । बलिहारी तद्रूप एक
पातीके वसीले सन्मुखभेंट करता है
(कैसीअध्यात्मीअनोखीपातीहै)
(१) प्रत्यक्त तिलकद्वारा माहात्म्य देखिये
जो प्रवेश मध्ये योग्यताहोय ॥
(२) फेर प्रश्नोत्तरद्वारा तत्त्वअनुभवह्व अव
श्य कहिये कि जुड़ाती वा तपाती छाती है ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
सितम्बर सन् १८९८ ई० ॥
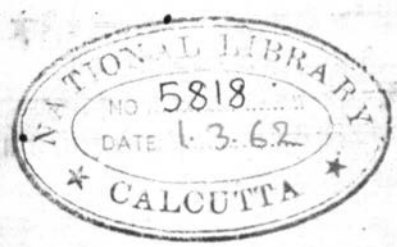
श्रीरघुबीर ॥

प्रमोद बनबिहार का सूचीपत्र ।

इति ॥

श्रीरघुवर ॥

प्रमोदबनबिहार ॥

प्रत्यक्षतिलक। कैसी पाती है ॥

(१ प्रत्यक्षपाती भाषारामायणं) जिमिअमोघरघुपतिकेबाना ॥ तिमिहीं हर्षिचलाहनुमाना ॥ १ ॥ बस हुजूर ज्यों की त्यों पाती है ॥ आज्ञातशत्रु है ॥ जैसे रविमण्डलदेखतलघुलागा ॥ उदयतासु त्रिभुवनतमभागा १ ॥

(२ प्रत्यक्षतिलक) जनमनमंजुमुकुरमलहरणी ॥ कियेतिलकगुणगणबशकरणी १ ॥ (गीतायां) तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यन्तितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ अ० चतुर्थ ॥ रामायणं ॥ गूढ़हुतत्त्वनसाधुदुरावहिं ॥ आरतअधिकारीजहँपावहिं १ ॥

(३ प्रत्यक्षअभिप्राय) १ श्रीनररूप हरिभक्तोंकेरिझाने ॥ २ धीरबीरपुरुषोंके जगाने ॥ ३ मुमुक्षूजनोंके सुझानेबुझाने॥ ४ बिषयीलोगोंके अधिकार समुझाने ॥ ५ हरिबिमुखोंके बिकराल खिझाने ॥ रघुबंशी सिंह किशोरोंके बिरझाने ॥ असमर्थलघुबालकोंकेरुझाने ॥ ८ पाखं खिवादमें उरझे सद्ग्रन्थों के सुरझाने॥ अन्तर्गत कामादि खलमण्डलीके जुझाने के अर्थ ॥

(४ प्रत्यक्षप्रमाण)पातीविषयप्रमाण क्याहैं॥ गीतायां अध्याय षोडश श्लोक २४, अध्याय नवम श्लोक २६, २, १६, १७, २२, २५, ३१, ३४ ॥ तत अध्याय चतुर्थ श्लोक ३४--

(५ प्रत्यक्षनिषेधलषणउवाच) कादर मनकरएकअधारा ॥ दैवदैव आलसी पुकारा ॥ गीतायां ॥ कुतस्त्वाकश्मलमि

दं विषमेसमुपस्थितम् ॥ अनार्य्यजुष्टमं स्वर्ग्यमकीर्त्तिकरमर्जुन ॥ बलिहारी आर्यवादी २ ॥ क्लैव्यंमास्मगमः पार्थ नैतत्त्व य्युपपद्यते ॥ क्षुद्रंहृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वो त्तिष्ठपरन्तप ॥ ३ ॥ अध्याय द्वितीय ॥

(६ प्रत्यक्षप्रमाणमूर्त्ति) प्रकट एक रघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्रनबीना ॥ ओं श्रीरघुवीरचरणरज मकरन्दमधुपाय नमः ॥ कहैरघुवीरशरणमस्ताना बुन्द में सिन्धुसमानाहै ॥ दिवानेक्याभूलंधर दूर चौदातबकरुवाबकीरचना ज्यों आतिशकेफूल ॥ देखो श्लोक ६६ अध्याय द्वितीय गीता ॥

(७ प्रत्यक्षप्रमाण) गीतायां ॥ इदंतुते गुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानंविज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् १ ॥ अध्यायनवम ॥ हे दिव्यनेत्रवान् यहअनुमानरूपी निर्गुणनाम अनर्थक खेल न

होइ ॥ यंही प्रत्यक्ष सगुण भूत वेदान्त है ॥ जेहिजाने जगजाइ हिराई ॥ जागे यथा स्वंप्नभ्रमजाई ॥ गीतायां ॥ अव जानन्तिमांमूढा मानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानन्तोममभूतमहेश्वरम् ११ अ० नवम यथाप्रकाशयत्येकः कृत्स्नंलो-कमिमंरविः ॥ क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नं प्रका-शयतिभारत ॥ भरतखण्डके आर्य श्री रघुवीर ३३ श्लोक अ० १३ इति ॥

तात्पर्य्य जिसेदेखनेमें योग्यताहो सो पक्रमणद्वारा विचारपूर्वक निर्दोष चित्त हो श्रीप्रमोदबनबिहारको देखै ॥ तत मम गोस्वामि श्रीरघुवीर प्रमोदबनबिहारीको

شعر گرنه بیند بروز شپر چشم چشمهٔ آفتاب را چه گناه
شعر بهبینم که تا کردگار جهان درین آشکارا چه-ارد نهان
بقول سکندر-بدرگاه توگردلیر آمدم نه از نزد روباه شیر آمدم

यहसर आवत अतिकठिनाई ॥ राम

कृपाबिनुआइनजाई ॥ राम सिन्धुघन सज्जनधीरा ॥ चंदनतरुहरिसन्तसमीरा ॥

इति

श्रीरघुवीरार्पणमस्तु

लघुबालअसमर्थ अनुगामी शिवानन्द

मिती ज्येष्ठसुदी पञ्चमी संवत् १६४५
तथा तारीख़ १५ जून. सन् १८८८ ई०

---*---

उपक्रमण (मङ्गलाचरण)

सो० नीलसरोरुहश्याम
तरुणअरुणबारिजनयन ।
करौसोममउरधाम
सदाक्षीरसागरशयन १ ॥

नारायणहरिहर ॥ हे रामात्मक श्री रघुवीर उदित दिवाकर ॥ हे गोस्वामी श्रीमगनानन्द धीरविदबरबर ॥ यह प्रत्यक्ष मङ्गलमोदमयी एक अगम सनेही पाँती है ॥ जो सनातन निजरमणीक मन्मनाथाती है ॥ बिरही रामदूतों प्रति मूर्त्तिवान् सम्पातीहै ॥ एक अध्यात्मी सुहृदसर्वविघ्ननिपातीहै ॥ स्वयंकामीदुष्ट घातीहै । स्वतः रामीसखासजातीहै ॥ चतुरचातकप्राति साम्यारहस्यस्वातीहै ॥ विवेकीहंसप्राति स्वक्षीरनिसोतीहै ॥ अ-

थवाविशुद्धबोधविग्रहंयुक्तयोगीमोतीहै ॥ प्रत्यक्षश्रीरघुवीर करतारकृत होनहार होतीहै ॥ श्रीगुरुपदनखमणिगणजोतीहै ॥ तत सुमिरतादिव्यदृष्टि हिय होती है ॥ जो अमानिभक्तिसर्वसमान में समानी तत तद्भूत होती है ॥

(कहैरघुबीरशरणमस्ताना बुन्दमेंसिंधुसमाना है) सोईपातीजोऐसीस्वरचित डाली ॥ सदासगुणसतगुरुकरुणाकटाक्ष कीप्रतिपाली ॥ हियहुलसीसी खुशहाली ॥ प्रत्यक्षभूतहै ॥ सोयुगलकरजोरे बिनीतनिहोरे ॥ अनाश्रितःमनुष्यमात्र केहुजूर में ॥ पेशेनज़रहोतीहै (मनुष्य श्लोक तृतीय अध्यायसप्तमगीतायां) ॥

(१) जैसेउदितदिवाकरके मध्याह्न दृष्टिकेसन्मुख कमलबनगन ॥ अथवा उलूकादिविपर्ययअसज्जनघन ॥ अथवा निशात्मक अन्धकारयमनघन ॥ प्र०

श्लोक २४ अध्यायचतुर्थ, श्लोक १४,१५ अ० पंचम॥

(२) बीरलषणलखिदशा॥ यथा मत्तगजगणनिरखि सिंहकिशोरहिचोप॥ तथा लषणलख्योरघुबंशमणि ताकेउ हर कोदंड॥

(३) फेरजोडालीकीअनोखीअसमर्थबाललघुरचनानिकालीहै॥ जो अघखगगणबधिकसाक्षात्कालीहै॥ योगक्षेमार्थप्रत्यक्ष शत्रुहन गोदघाली है॥ भरणपोषणार्थ भरतउदारमेघ यहनवीनशशिशस्लीहै॥ मारुतसुतनितमारुतकरई यहीचर्मउदारखुशहालीहै॥

देखिये हे भगवन् तिसडालीकेरचनाकी योगयुक्ति कैसी है जैसे कोई मस्ताना बिनमोलबिकाना गुलाममाली निजप्रभुबनमालीके पुष्पबाटिकाबोंसे॥ हरणसकलश्रम शीतलअमराईसे॥

अनुमाने मनमाने पहिंचाने सन्माने चुनें वृक्षों के चीदा चीदा पुष्प निष्कंटक चुनिकै ॥ निर्भय अशोच्यावमिमाशुचः स्थानमध्ये स्थितहोइकै ॥ चित्तकोएकाग्र करिकै ॥ स्वामि रिझानेवाली वीरत्व धारणा धारिकै ॥ गोस्वामी विनयपत्रिका तद्रूपडाली की रचनासम्भारि कै ॥ यथार्थ स्वबेला अनमोला समय ॥ साम्यारहस्यसभामध्ये ॥ गोस्वामीमगनानन्द श्रीरघुवीर शाश्वतगुरुके हुजूर में भेंटकरै ॥

(सगुणप्रत्यक्षप्रमाणभूत) प्रकटएक रघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्रनबीना ॥ १ ॥ कृपागरीबनिवाजकीदेखतगरीबको साहसबांहगही है ॥ ४ ॥ मुदितमाथनावतबनीतुलसीअनाथकी परीरघुनाथसहीहै । हुजूरयोंसमर्थों की बही असमर्थोंकी सही है ॥ पद ३ विनय २७९ ॥

(४ डांलीकीपठौनी नामबायनाकी रीति) जोबालककहै तोतरबाता ॥ मुदितहोहिंसुनि पितुअरुमाता ॥ परन्तु बांझकिजानप्रसवकीपीरा ॥ बलिहारी स्वमातुकौशल्यादि तत हे मातजानकी॥ जोरघुवीरप्राणप्राणकी ॥ मालीसुभगंसनेहबन सियरघुवीरबिहारु ॥ बन्दौंसन्त समानचित हितअनहितनहिंकोइ॥ अंजलिगतशुभसुमनजिमि समसुगंधकरदोइ ॥ १ ॥ सन्तसरलचितपरमहित जानिस्वभावसनेहु ॥ बालविनयसुनिकरि कृपारामचरणरतिदेहु ॥ २ ॥

(५) मज्जनफलपाइयततकाला ॥ काकहोहिंपिकबकौमराला ॥ १ ॥ सुनि आश्चर्यकरैजनिकोई ॥ सतसंगतिमहिमानाहिंगोई ॥ २ ॥ बन्दौंगुरुपदकंज कृपासिंधुनररूपहरि ॥ महामोहतमपुंज जासुबचनरविकरनिकर ॥ १ ॥ समभ-

निरहनिकहनितुलसीकी कोरूपालुबिन बूझै ॥ १ ॥ यह अपेलनेमहै ॥ जैसे कागजहाज़को सूझतओरनछोर ॥

(६) श्रीरघुवीरचरणार्पणमस्तु ॥ तदनन्तर प्रमोदबनबिहारमध्ये शाश्वत बिहारींकी रूपासे ॥ प्रौढ बलुबालुलघुअ-समर्थ (नाम अमानी) बिहारीमस्तु ॥ एवमस्तु ॥ नटसेवकहिनव्यापैमाया ॥ स पनेहुँसांचेहुमोहिंपर जोहरगौरिपसाव ॥ तौ फुरहोहि जो कहौं सब भाषाभणितं प्रभाव ॥ १ ॥

(७) महेशउवाच ॥ उमारांमगुण गूढ पण्डितमुनिपावहिंविरति ॥ पावहिं मोहंविमूढ जोहरिविमुखनधर्मरति ॥ अं-गदउवाच ॥ जोशठसकैमोरपदटारी ॥ फिरहिंरामसीतामैंहारी ॥ १ ॥

(लषणदशाशक्रजितमर्दनसमय) सु-मिरिकोशलाधीशप्रतापा ॥ शरसन्धा-

निकीन्हअंतिदापा ॥ १ ॥ रामउवाच) जोरणहमैंप्रचारैकोई ॥ लरेंसुखेनकाल किनहोई ॥ १ ॥ (कृष्णउवाच) क्षिप्रंभवतिधर्मात्मा शश्वच्छांतिनिगच्छति ॥ कौंतेयप्रतिजानीह नमेभक्तःप्रणश्यति ॥ ३१ ॥ अध्यायनवम ॥ करछायलकेसींग को ऐंठिजमावतकौन ॥ (सञ्जयउवाच) यत्रयोगेश्वरःकृष्णोयत्रपार्थोधनुर्द्धरः ॥ तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥ अ० अष्टादश ॥

(तुलसीदासउवाच) गुरुपदरजमृदु मंजुलअंजन ॥ नयनअमियदृगदोषविभंजन ॥ १ ॥ तेहिकारिविमलविवेकविलोचन ॥ बरणौंरामचरितभवमोचन ॥

असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

इति ॥

(प्रत्यक्षसगुणहुजूरीसंवाद) नानिर्गुण अनुमानी बकवाद ॥ (भाषारामायण) परशुरामउवाच ॥ बहुजूर श्रीरामलषण (तिलक जो सम्पूर्ण बाद समझने योग्य है ॥ तैसाही श्रीअङ्गद रावण हुजूरी बाद है) अनुचित बहुत कह्यों अज्ञाता ॥ क्षमहु क्षमामन्दिर दोउ भ्राता ॥

(गीतायां) श्रीकृष्णउवाच ॥ कालो ऽस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्त्तु मिहप्रवृत्तः ॥ ऋतेऽपित्वां न भविष्यंति सर्वेयेऽवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः ३२ ॥ व श्लोक ३६ ॥अर्जुनउवाच॥ श्लोक४०, ४१, ४२, ४३ ॥ तस्मात्प्रणम्यप्रणिधाय कायं प्रसादयेत्वामहमीशमीढ्यम् ॥ पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युः प्रियःप्रियायार्ह- सिदेवसोढुम् ॥ ४४, ४५, ५१ से ५५ तक सर्वमात्र अध्याय एकादश विश्वरूपदर्श- नयोगोनाम ॥

(रामायणं) रामउवाच ॥ तिन्हकहँ कालरूप मैं ताता ॥ शुभ अरु अशुभकर्म फलदाता १ ॥

(विभीषणउवाच) श्रवणसुयशसुनि आयों प्रभुभञ्जन भवभीर ॥ त्राहित्राहि आरतिहरण शरणसुखदरघुवीर १ ॥ (रामउवाच) जेनमित्रदुखहोहिंदुखारी ॥ तिन्हैं विलोकत पातक भारी १ ॥

(असमर्थलघुबालविनय) मेरीबनाई तोबनिचुकीअबआपुहीबनाउ जो बनाइबे योगहै ॥ सीखी सिखाई बिसरिगई सर्बविद्या अरुअविद्याहूत्यागगई बलिहारी यह विचक्षण वियोगहै १ ॥

मैंतोबिगारीनाथसों आरतिकेलीन्हैं ॥ तोहिंकृपानिधिक्यों बनै मेरीसी कीन्हे १॥

श्रीरघुवीरपाहिमाम् ३ श्रीरघुवीररक्ष माम् ३ मेरीसुधारी सो सबभांती ॥ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती १ ॥

(श्रीरघुवीरउवाच) जबते रामचरण चितदीन्हा १ छूटेउभ्रांतिजनितसंसृत दुख वनप्रमोदघरकीन्हा २ नित्यानन्द विहारएकस वृद्धहोइनहिंछीन्हा ॥ (जो हुजूरी सगुण साम्यारहस्य). ३ ॥ सेवतशिवसनकादिकनारदब्रह्मादिक परबीना ४ ॥ प्रकट एक रघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्रनबीना ५।१३ ॥

(तुलसिदासउवाच) जाकीकृपालव लेशते मतिमन्दतुलसीदासहूं ॥ पायोपरम विश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूं१ ॥ वविनयपत्रिकाचर्म २७९ ॥ तिमिं रंघुवीर निरन्तर प्रिय लागहु मोहिं राम १ ॥

(अर्जुनउवाच) गीता ॥ नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ॥ स्थितोस्मिगतसन्देहः करिष्येवचनंतव ७३ ॥ अध्याय अष्टादश ॥

(भरतउवाच) नाथ न मोहिं संदेहकछु

सपनेहु शोक न मोह ॥ केवल कृपा तु-
म्हारि प्रभु कृपानन्द सन्दोह १ ॥

(लषणमाहात्म्य) जो कारण रहित
कृपाल ॥ उदारहित करतार ॥ श्रीरघुवीर
गोस्वामीके हुजूर में हाजिरकी चर्म इत्त-
लायं कारी ॥ जिनकी श्रीरघुवीरने कदा-
पि २ सिफारश न टारी ॥ लषणधामप्रिय
राम सकल जगतआधार ॥ गुरु वशिष्ठ
तेहिराख्यो लक्ष्मणनाम उदार १ ॥

(कपिदशा) सुमिरि पवनसुत पावन
नामू। अपने बशकरि राखे रामू ॥ फेर
किष्किन्धा में जो रघुवीर कपि संबादहै
सोई हुजूरी साम्यारहस्य है ॥ रामायण
मात्र में शिरोमणि है ॥

(रघुवीरउवाच) निज सेवाबश भये
कनौड़े कहेउ पवनसुत आउ ॥ देबेको न
कछू ऋणियांहौं धनिकस्वपत्र लिखाउ ॥
((तिलक धन्य ३ हे पवनसुत (१ जो

अगमअमानी नाम असमर्थ लघुबालक पुत्र॥ २ फेर पवनपद का पदार्थ बचन है शब्दगुण आकाशं ॥ ३ दोही प्रकार की सृष्टी है एक बुन्द सृष्टी एक नाद सृष्टी॥ ४ वचनही मुख्य श्रेयपद है ॥ तुलसी जासु क्चन रविकरनिकर ॥ अर्जुन करिष्ये वचनन्तव)फेर धन्यहै हे मातास्वरूपी श्रीरामचन्द्र रघुवीर))॥

बस जानलो रघुवीरपदका सगुण अर्थ यही है। जो जानहिं कवि कोविद। अन्य नास्ति २॥ माधवकी गति माधव जानैं॥ धन्यहै जो ऐसे कपि का कवि का प्रजा- (प्रजाका अर्थ रैयत व पुत्र है ॥ अर्जुन भी कपिध्वज है ॥ विजयद है) है॥ जाके सुमिरनते रिपुनाशा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा॥(हे कलकी दिवाकर उदित कीजिये भिषारी क्षुधितोंको मुदित)॥

श्रीरघुवीरचरणार्पणमस्तु ॥ शिवानन्द॥

श्रीरघुवीर॥

(प्रत्यक्षसगुण बालबिनोद) मायाचाकी कीलहरि जीवचराचरनाज ॥ तुलसी जो बाचाचहै तो कील शरणको भाज१ ॥ हुजूर कुछ औरहू प्रेमलपेटे लटपटे बचन सुनिये ॥

(१) श्रीमद्भगवद्गीताका मुख्य तिलक एक श्रीभाषारामायण गोस्वामी तुलसीदासकृतमात्रहै यह असमर्थ नेमहै ॥

(२) सो भाषारामायण साम्यकआचार्यग्रन्थहै जो बर्त्तमानकाल में प्रमाणीक धर्मपूर्त्तिहै ॥ पुनि क्वचिदन्यतोपि ॥

(३)अरु विनयपत्रिका गोस्वामी का निजअनुभवगम्यसिद्धान्तग्रन्थहै (तिलक सगुण वेदान्तके फलका नाम सिद्धान्तहै) तिसके एक एक विनयपत्रिका का तत्त्व अभिप्राय क्या है ॥ हे भगवन् गीता अध्याय अष्टादश श्लोक ६१ से ६६

पर्य्यन्तमात्र है॥ तदनन्तर गोप्य मध्ये गोप्य श्लोक ६६ मात्र ॥

(४नेम)समुझनिरहनिकहनितुलसीकी कोकृपालबिनुबूझै॥ अथवातुलसीदासका कृपापात्र निजभक्तही जानसक्ताहै यह अ-समर्थ नेमहै ॥ مصر ۴ـ تصنیف را مصنف نہ کہہ بیان

(५) जैसे श्रीगीता १ श्रीरामायण २ श्री विनयपत्रिका ३ इस श्रीप्रमोदबनबिहार४ में साम्यारहस्य स्वरूप निरन्तर समत्वहै तैसेही श्रीअर्जुन १ श्रीकृष्ण२श्रीराम ३श्री लषण४श्रीभरत ५श्रीशत्रुघ्न ६ श्रीकपि ७ श्रीतुलसीदास८ श्रीरघुवीरदिवाकरउदित-९ मेंसाम्यारहस्यात्मक अखण्ड मिलाप है॥ अगमसनेह भरत रघुवरको॥ जहँ न जाइ मन विधि हरि हरको १ अथवा बर-णतबरणप्रीतिबिलगाती ॥ ब्रह्मजीवइव सहजसंघाती یہ متحد اتحادی १ ॥ हुजूर गूंगेका गुड़है ॥ सो क्या जाने ॥ एक न

सुनहिं एकनहिंदेखा ॥ गुरुशिषअन्धबधिर करलेखा १ ॥ जिसको शङ्काहो प्रचारके प्रत्यक्ष समाधान अनुभव करलो ॥ हां उलूक प्रति उदित दिवाकर की उष्णता यदापित्वचाद्वारा अस्तिहै तदपि प्रत्यक्ष नेत्रद्वारा स्वतः नास्ति ॥ जैसे चोर के अनुभव में बेंतलगने समय बराबर कोई हाक़िम है परन्तु अंधेरी रात्रिमें चोरी करने समय कोई हाकिम नहींहै अबिबेकी जीव कर्म करने समय बराबर समर्थ नाम स्वतन्त्रहै परन्तु फल भोगने समय चें चें बराबर करता नाम परितन्त्र है प्रत्यक्षकेलिये प्रमाण किं ॥ श्लोक २१ अध्याय १३ ॥ عرفت ربي بفسخ العزائم

(श्रीनररूपहरि राम उवाच) मम दर्शन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज स्वरूपा ॥ (तथा उपदेश) औरौ एक गुप्तमति सबहिं कहौं करजोरि ॥

शंकरभजन बिनानर भक्ति न पावहि मो-
रि ॥ (प्रमाण कृष्णउवाच) गीता अ-
ध्याय दशम श्लोक २३ , ३१ ॥

(६) नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वच
क्षुषा॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमै-
श्वरम् ॥ ८ ॥ अ० एकादश ॥ गीतायां ॥
(७ यहसाम्यांरहस्यस्वरूपविनयहै)अस-
मर्थनेम ॥ स्वामीसहितसबसेकहौं मुनि
गुणिविशेषकोईरेखदूसरीखांचौ ॥ बिद्य-
मानरणपाइारिपु कायरकथहिप्रताप ॥

مثلہ—مشتی کہ بعد ازجنگ یاد آید برکلۂ خود بایدزد

(८) श्रीरामलषणयुगलडांदितंवीर
दशा) पुरुषसिंहदोउवीरहर्षिचलेमुनिभय
हरंण।कृपासिन्धुरणधीरअखिलविश्वका-
रणकरण॥ श्रीनररूपहरिनमः॥ प्रकटए-
करघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्रनबीना ॥
असमर्थ लघुबालकशिवानन्द ॥
मूलमंत्र श्रीरघुवीरहै ॥ इति

श्रीरघुबीर॥

।

(चर्म्मंउपक्रमण يعني غايت وغرض سرنامه كي

(१) दीनदयाल दुरितदारिद्दुख दु-नीदुसहतिहुंतापतईहै ॥ देवद्वारपुकार-तआरतसबकीसबसुखहानिभईहै १, २। राजसमाजकुसाजकोटकटु कल्पितकलुष कुचालिनईहै ॥ ३ ॥ प्रजापतितपाखण्ड पापरतअपनेअपनेरंगरईहै ॥ ४ ॥ शान्ति सत्यशुभरीतिगईघटि बढ़ीकुरीतिकपटक-लईहै॥ सीदतसाधुसाधुताशोचाति खलबि-लसतहुलसतखलईहै ॥ ५ ॥ कामधेनुध-रणीकलिगोमर قصائي विवसबिकलजामाति नवईहै ॥ ६,७,८ ॥ दीजैदाददेखिनातोब-लिमहीमोदमंगलरितईहै । भरैभागअनु-रागलोगकहैं रामअवधिचितवनिचितईहै ९,१० ॥ समरथबड़ोसुजानसुसाहबसुकृत सैनहारतिजितईहै॥ सुजनसुभावसराहत

सादर अनायाससासतिबितईहैं॥ ११॥ उथपेथपनउजारिबसावनौ गईबहोरिबिरदिसदईहै॥ तुलसीप्रभुआरतिआरति हरअभयबांहकेहिकेहिनदईहै (हे गोस्वामीकल्कीदिवाकरउदित) १२॥ १३९॥ हे भगवन् कथा न बढ़ने के अभिप्राय से इसमुख्यविनयको कादरने संक्षेपसे लिखाहै॥ सोपुरुषप्रयत्नात्मक परिश्रम अंगीकार करके सर्व को विचारपूर्वक चित्तको एकाग्र करिके अवलोकन करैं नेमधरैं॥

(२) तेनर नरकरूप जीवतजग भवभंजनपदविमुखअभागी॥ निशिबासर रुचिपापअशुचिमन खलमनमलिननिगमपथत्यागी॥१॥ नहिंसतसंगभजननहिं हरिकोश्रवणनरामकथाअनुरागी॥ सुत बितदारभवनममतानिशि सोवतअति न कबहुंमतिजागी॥ २॥ तुलसिदास

हरिनामसुधातजि शठहठिपियतविषय विषमांगी ॥ शूकरश्वानशृगालसरिसजन जन्मतेंजगतजननिदुखलागी ३, १४० ॥

قطعه زنان باردار اي مرد هشيار اگر وقت ولادت مار زايند
ازان بهتر بنزديک خردمند که فرزندان ناهموار زايند

(३ श्रीरघुवीरउवाच) नामको जपैयासर्वज्ञहोत रामनामकोप्रभाव बाल्मीक नेबतायोहै ॥ १ ॥ तातेरघुवीरअभयनाम कोप्रभावजानि कुम्भजरकारभवबारिध सुखायोहै ॥ ६ । १७ प्रमोदबनबिहार ॥

(४ असमर्थसाम्यक विनय) नीके ररिवये सुधारिकैनीचकोडारियेमारिदुहूं-ओरकीविचारि अबन निहोरिहौं ॥ तुलसीकहीहै सांची रेखबारबार खांची ढीलकिये नाथनाम महिमाकीनाव बोरिहौं ॥ १ ॥ हेबरदोवायुबाहनः ॥ इति ॥

श्रीरघुवीरचरणरजमकरंदमधुपायनमः

असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

श्रीरघुवीर

प्रमोद्‌बनबिहार ॥

(उदित) नाम (प्रारम्भ)

१ सुनौमनयारउपदेशी जगतसोआपु परकाशै १ ॥ गुरूउपदेशजबदेवै नामरू- पक्रियासबखोवै २ ॥ तबस्वअन्दरबैठि गमखांवै तोआपुको आपुमेंपावै ३ ॥ स्वरूपानन्दजबभीजै ब्रतीसबताहिमेंछी- जै ४ ॥ मोहदिनरैनपरछाहीं देशगुण- कालतहँनाहीं ५ ॥ मगनानन्दयोंजागै द्वैतपरपंचसबभागै ६ ॥

२ +स्वस्समवेदसमुझमनमेरे ऐसनदेशह- माराहै १ ॥ बिनायन्त्रवहँयन्त्रीबांजैं बिना भानुउजियाराहै २ ॥ बिनुरसनावहशब्द उंचारै मुरलीबीनसितताराहै ३ ॥ वहां जाइमनमगनभयोहै नामरूपक्रियाटारा है ४ ॥ सोहंशब्दएकद्वितियाबिनु ररंकार बिस्ताराहै ५ ॥ कालकर्म्मगुणसंशय

+ स्वस्समवेदगीताहै ॥

नाहींमृत्यूयमतेन्याराहै ६॥ मगनानन्दभे-
दसोपावै जोगुरुमगपगुधाराहै ७ ॥

३ जगतहैरैनकासपना तूक्यागाफिल
भुलानाहै १ ॥ कुटुमपरिवारधनदारा
नहींअपनाबिरानाहै २ ॥ सुमिरसुख
रूपअपनेको सदाहाजिरसमानाहै ३ ॥
मगनानन्दभलशोधा नहींदुसराठिका-
नाहै ४ ॥

४ अपारध्वनिओंकारसुन नाहिंसमयऐ
सनीबनी १ ॥ सरसश्रवणअपारदरशै
मिलैअमृतध्वनी ॥ २ ॥ ध्वनिसुनीपि-
याखबरकी तबसुरतिचैतनबनी ३ ॥
भईबिरहिनिसुरतिनिशिदिन रटैसतगुरु
मनी ४ ॥ सत्यपरसेसत्तभइ सतसत्त
सत्ताहिसनी ५ ॥ सत्यमेंदमकीप्रभा
आनन्दअम्बुधजनी ६ ॥ होइमगनआ-
नन्दमें यहकह्योसतगुरुधनी ७ ॥

(५) झूलतसन्तसुजानसंभारे ॥ १॥

शून्यशिखरपरअजरहिंडोलन अर्द्धऊर्ध्व असमानठियारे २ ॥ आपाखम्भपवनकी डोरी सुरतिझुलावनिहारिकियारे ३ ॥ इड़ापिंगलाचमरढुरावैं सुषमनदीपक बारिदियारे ४ ॥ जगमगझिलामिलुदामिनिदमकै शब्दअनाहदअमरपियारे ५ ॥ बिनुबादरवहँआनँदबरसै बरसिबरसिझरियारकियारे ६ ॥ भीतर बाहिर त्रिगुणभीँजै पँच रँग धोइ बहाय दियारे ७ ॥ मगनानन्द अचल यहझूलन झूलनहारे गुरूके पियारे ८ ॥

६ चैतनमंगलमोदमई है १॥ सर्वनिवासी सदाअलेपा घटपट अन्तरबाह्य सोईहै २ ॥ एक जो ज्ञान स्वरूप कहावत सुगति सजाति विजाति छई है ३ ॥ शुद्ध स्वरूप अखण्डसोनिर्मल हौंमैंरहित प्रकाशमईहै ४॥ मगनानन्द बुद्धिको साक्षी घटघटसोहंसुरतिठईहै ५ ॥

७ हमननिजरूपकेआशिक यहीमाशूक हमाराहै १॥ जोजानैहै सकलघटकी वही यहखेल धाराहै २॥ जोनभसम एकविभुव्यापी उसीका रूपसाराहै ३ खखैयह देश गुरुज्ञानी जिन्होंने मनसँभाराहै ॥ मगनानन्दगुरूगमकी अलखगति अपारोत्वाराहै ५॥

८ चैतनभिन्नअपरनहिंकोई १॥ जोभासैसबसतचिदआनँद दूसरहुआ न होई २॥ आपुआपुमेंसबकुछभासै चिदबिलास है सोई सर्वयहचैतनजोई ३॥ आपुहिब्रह्म ब्रह्मनहिंजानै आपुहिजानैसोई ४॥ मगनानँदकछुयत्ननहीं है आपामिटे सुखहोई द्वैतनहिंभासैकोई ५॥

९ सतगुरुनामजपौमनमेरे भ्रांतिदूरहोइजाई १॥ नीचेकमलऊर्ध्वहोइबिकसैअद्भुतकलादिखाई २॥ शेषचालचलिबंक नालचढ़ि त्रिकुटीजाइसमाई ३॥ ताके

ऊपरपक्षीमारग सुरति गगनको जाईं ४ अम्मरमध्य छिद्रइक सूक्षम तेहिमहँ जाइ समाई ५॥ तामहँ जाइबढ्यो जिमि बामन तिलब्रह्मांण्ड मिटाई ६॥ मगनानन्दअचल होइ बैठ्यो आपागयो भुलाई ७॥

(समानरहस्यनामसगुणअगमसनेही उपदेश)

जबलगिसतगुरुमेंरामतेअधिकबोधत्व (जोअगमसनेह) नहींहोता॥ अरु सतगुरु तत्त्वदर्शी (जो अगमसनेही नाम मगनानन्द श्रीरघुवीर)अपुनाइके उरलाइ नहीं लेता। तबलगि ज्ञान सुफल नहीं होता॥ यह नेमहै॥ हुजूर यहां अर्द्धउन्मेलनकीभी गम्य नहीं॥ काहे कि रामको आंखिसे देखानहीं॥ अरु बिवेकी सतगुरुकोआंखिसेदेखाहै॥ مصرعه شنیده کی بود مانند دیده मेरेमनकछु अस विश्वासा। रामतेअधिकरामकैदासा॥ देखौ विशेषकी सर्व प्रशंसा करते हैं परन्तु

समानहीं समानरूपसे सर्व समानमें स-
माना है خیر الامور اوسطہا अमिय गरल अरिहित
समहोई । तेहिमणिबिनुसुखपावनकोई ॥
वारिमथेघृतहोइबरुसिकतातेबरुतेल। बिनु
हरिभजननभवतरियवहसिद्धान्तअपेल ॥
(युक्ति)ज्योंहीं सूर्य,अग्निमणि یعنی شیشۂ آتشی
नीलवस्त्रसन्मुखहोताहै(जोसगुणशरणंहु-
जूरी قران السعدین त्योंहीसगुणाग्निसाक्षात्कार
होतीहै (जोप्रत्यक्षज्ञानाग्नि) آب آتش لباس यह
अपेलनेमहै । असमर्थअनुगामीशिवानन्द॥
(तिलक) नीलसरोरुहश्याम तरुणअरु-
णबारिज नयन ॥करौसोममउरधाम स-
दाक्षीरसागरशयन ॥ बन्दौंगुरुपदपद्म
परागा ॥ सुरुचिसुबाससरसअनुरागा१ ॥
श्रीगुरुपदनखमणिगणज्योती ॥ सुमिरत
दिव्यदृष्टिहियहोती १॥ देखो तिलक ॥
सो० । बन्दौंगुरुपदकञ्ज कृपासिन्धुनर
रूपहरि ॥ महामोहतमपुञ्ज जासु वचन

रविकरनिकर १ ॥ दो० ॥ सुनिसमुझहिं जनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग ॥ लहैं चारिफलअक्षततनसाधुसमाजप्रयाग १॥ मणिमाणिकमुक्ताछबिजैसी । अहिगिरि गजशिरसोह न तैसी ॥

(उपदेशविनयपत्रिका ४६(चर्मपद))॥ ऐसीआरतीरामरघुवीरकीकरहिमन ॥ हरणदुखद्वन्दगोविन्दआनन्दघन १ ॥ बिमलहृदिभवनकृत शान्ति पर्यंकशुभ शयन विश्रामश्रीरामराया॥ क्षमाकरुणाप्रेमस्वतन्त्रपरिचारिका यत्रहरितत्रनहिंभेदमाया ५ ॥ यहिआरतीनिरतिसनकादिशुकशेष शिव देवऋषिअखिलमुनितत्त्वदरशी ॥ करै सोइतरैपरिहरैकामादिमलवदतइति अमलमतिदासतुलसी ६ ॥ ४६ ॥

विनय १ चर्मपद ॥ मांगततुलसिदास करजोरे ॥ बसहिंरामसियमानसमोरे ॥

विनयपत्रिका गोस्वामी तुलसीदास

कृत ५२ ॥ चर्मपद ॥ कालकलिजनित मलमलिनमनसर्वनर मोहनिशिनिविड़ यमनांधकारं ॥ विष्णुयशपुत्रकल्कीदिवाकरउदित दासतुलसीहरणंबिपति भारं ६ ॥ ५२ ॥

चर्मे विनयपत्रिका जो परमार्थ ॥२७६॥ मारुतिमनरुचिभरतकी लखिलषणकही है ॥ कलिकालहूँनाथनामसों प्रतीतिप्रीतिएककिंकरकीनिबही है ॥ १ ॥ सकल सभासुनिलयउठीजानीरीतिरहीहै ॥ कृपा गरीबानिवाजकी देखतगरीबकोसाहसबांहगहीहै ॥ २ ॥ बिहँसिरामकह्यो सत्यहै सुधिमैंहूंलहीहै ॥ मुदितमाथनावतबनी तुलसी अनाथकी परी रघुनाथसही है ३ ॥ २७६ ॥

देखो नामके जापका तत्त्व माहात्म्य रामायणबिषे ॥ बन्दौंनामरामरघुवर के ॥ हेतुकृशानुभानुहिमकरके ॥ इस

चौपाईसेलेंकै॥ इहिविधिनिजगुणदोषक-
हिसबहिबहुरिशिरनाइ॥ बरणौंरघुवरविश-
दयशसुनिकलिकलुषनशाइ॥ पर्यंतइति॥

ओम्तंतत्सदित श्रीमद्भगवद्गीतायां॥
समंकायशिरोग्रीवं धारयन्नचलंस्थिरः॥
सम्प्रेक्ष्यनासिकाऽग्रंस्वंदिशश्चानवलोक-
यन्॥ १३॥ अ० ६॥ देखो स्वंपदकापदार्थ
नाम महिमा नीचे तिलकसे.॥

तत अ० पंचम श्लोक २७ व २८ व
२९ योंतःसुखोंऽतरारामस्तथान्तर्ज्योतिरे
वयः॥ सयोगीब्रह्मनिर्वाणंब्रह्मभूतोऽधि
गच्छति २४ अ० ५॥

तत सर्वधर्म्मान्परित्यज्य मामेकंशरणं
व्रज॥ अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि
माशुचः ६६, श्लोक ६१ से ६५ तक॥

तत यत्रयोगेश्वरःकृष्णो यत्रपार्थोधनु-
र्द्धरः। तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्म्मति
र्मम॥ श्लोक ७८ अ० १८॥

ततदेखोअध्यायचतुर्थ (गीतायां) श्रीनर रूपहरिकृष्णउवाच॥इमंविवश्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययम् ॥ विवस्वान्मनवेप्राहमनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् १॥ यदायदाहिधर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत॥ अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ परित्राणाय साधूनांविनाशायचदुष्कृताम् ॥ धर्म्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामियुगेयुगे॥ ८ ॥ तस्मादज्ञानसम्भूतंहृत्स्थंज्ञानासिनात्मनः॥ छिंत्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ॥ ४२ ॥ ज्ञानयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥

रामायणबालकाण्ड॥जबजबहोइधर्मकी हानी॥बाढहिंअसुरअधमअभिमानी १ करैं उपद्रवजाइनबरणी॥ सीदहिं बिप्रधेनुसुर धरणी २ तबतबप्रभुधरिविविधशरीरा॥ हरैं कृपानिधिसज्जनपीरा३॥दो०॥ असुरमारि थापहिं सुरन राखहिं निजश्रुतिसेतु॥ जग बिस्तारहिंविशदयश रामजन्मकरिहेतु १॥

(तिलक) समंकायशिरोग्रीवं धारयन्न चलंस्थिरः ॥ सम्प्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥ अ० ६ यह श्लोक राजयोग विहित कर्म्म योग के अभ्यास करने में प्रधान है ॥

(१) (स्वं) पदकापदार्थअनुस्वारहै (जैसा रामं कृष्णं रघुवीरं) तात्पर्य कर्मयोगाभ्यासके धारणाधारनेमें अलंकार नेत्रके अनुस्वारको॥ दृष्टिअर्द्धउन्मेलन नासिकाग्रद्वारा॥सेवनंकरनाध्रुवाहै॥ يعني نقطه درميانه شبيه چشم را بذريعه نگاه ميانه رو بمقابل خاص نوک بيني پرستش مي نمايند

और बैठक सिद्धासन॥ भूमिकाकूर्म पीठ॥स्थाननिर्विघ्न,रमणीक,शुचि,सुगंधि तआदि ॥ योगाभ्यास के अङ्गभूत हैं ॥ प्रमाण रामायण ॥ नीलसरोरुहश्याम तरुणअरुणवारिजनयन । करौसोममउर धाम सदाक्षीरसागरशयन ॥

(२) माहात्म्ययोगकागीतायां ॥ तपस्विभ्योऽधिकोयोगी ज्ञानिभ्योऽपिमतोऽधिकः ॥ कर्मभ्यश्चाधिकोयोगी तस्माद्योगीभवार्जुन ॥ ४६ ॥ योगिनामपिसर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना श्रद्धावान्भजतेयोमां समेयुक्ततमोमतः ॥ ४७ ॥ अभ्यास योगोनामषष्ठोऽध्यायः ॥

(३)(माहात्म्यसांख्यका) सांख्ययोगौ पृथग्बालाःप्रवदन्तिनपण्डिताः॥ एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विंदतेफलम् ॥ ४ ॥ यत्सांख्यैः प्राप्यतेस्थानं तद्योगैरपिगम्यते॥ एकंसांख्यंच योगंच यःपश्यतिसपश्यति५॥ अ० पञ्चम(तिलक)जोसांख्ययोग गीताविहित दोनोंमें प्रवीणहै सोई यथार्थ तत्त्वदर्शी है ॥ अरु जो एकमेंभी अकुशल सो काना ॥

और जो दोनोंमें अधिकार शून्य सो अन्धा ॥ जैसा धृतराष्ट्र ॥

(४) जिसतीव्रतमतर मुमुक्षूको कदाचित् श्रद्धाविश्वास सतगुरू सत्शास्त्र सद्मुक्ति में हो يعني عشق حقيقي वह बेखटके सहज सुभाये॥

(अ) स्वप्रकाशसंहिताउपदेशी श्री रघुवीर मम असमर्थ शिवानन्द गोस्वामी से समुझिलेवे अरु यथायोग्य शिक्षा अनुगमन प्रसादसे कृतार्थ होय॥ जो अनुभवगम्यहै॥

(इ) अरु संक्षेपसे देखनाहो सो (श्री परमहंस उपदेशी पूजाविधि) से देखे जो छापाखाना फतेहगढ़में छपतीहै॥

(५) रामचर्मउवाच॥बहुतकहौंकाकथा बढ़ाई। यहआचरणबश्यमैंभाई॥ १॥

श्रीरघुवीरचरणार्पणमस्तु॥

असमर्थअनुगामी शिवानन्द॥

१० दिवानेक्याभूलाघरदूर ॥ १ ।

चौदह तबक़ ख्वाब की रचना यह आ

तिशकेफूल يعني پهول آتش بازي کے ॥ २॥ क्या सोवै तू मोहनिशामें नहिंपाया महिबूब ॥ ३ ॥ जेहिकोवारापार न सूझै भटक भटकमरैकूर ॥ ४ ॥ मगनानन्दपूरजबदरश्यो क्यानेरे क्यादूर ॥ ५ ॥

११ आपुहिसतगुरुजगतपसारै आपुहिदेखनहाराहै ॥ १ ॥ बाहिर दृष्टीजगत पसारै अन्तरदृष्टी टाराहै ॥ २ ॥ ज्ञाता ज्ञानज्ञेयत्रिपुटीयहविष्टिसमष्टीजाराहै३॥ मगनानन्द स्वरूपअखण्डित सबमहँसब से न्याराहै ॥ ४ ॥

१२ मैं आपुहिमें आपुसमाया ॥ १ ॥ स्वयंप्रकाशनसोवतजागत नहिंकहुँगया न आया ॥ २ ॥ नहिं उत्पतिनहिं परलय सृष्टी ईश्वरजीव न माया ॥ ३ ॥ वेद कुरानशिष्यनहिंमुर्शिद अलखअरूपअजाया ॥ ४ ॥ नामरूपक्रियारज्जुसर्प्पजिमि अद्भुतखलकदिखाया ॥ ५ ॥ मग-

नानन्दस्वरूपअखण्डित गुरुदृष्टीदरशां-
या॥६॥ देखोस्तोत्र नमामिभक्तवत्सलं॥
अत्रिमुनिकृत जो ४० व ४१ सफामेंहै॥

(स्वरूपमन्त्र) सूर्यमण्डलमध्यस्थं
रामंसीतासमन्वितम् ॥ नमामिपुण्डरी
काक्षं मामेवंगुरुतत्परम् ॥ १ ॥

(युक्ति) सकलदृश्यनिजउदरमेलिनि-
द्रातजिसोवैयोगी ॥ सोइहरिपदअनुभवै
परमसुखअतिशयद्वैतबियोगी ॥ १ ॥ कहँ
लगिकरौंमैंनामबड़ाई ॥ रामनसकहिं
नामगुणगाई ॥

(असमर्थ विनय) तात्पर्य रघुवीरजो
पांचोपंडामध्ये छठानरायणहै॥ तत यही
रघुवीर तात्पर्यमध्ये तात्पर्यपरायणहै १॥

(ध्यानं) मारुति भरत लषण शत्रु-
हन सियराम सहित रघुवीर धाम॥
अगमसनेह भरतरघुबरको । जहँ न जाइ
मन विधि हरिहरको ॥ भरतसरितको

रामसनेही । जगजपुराम रामजपु जेही ॥
सो० ॥ पुरुषसिंह दोउवीर हर्षिचले मुनिभयहरण । कृपासिन्धुरणधीर अखिल विश्वकारण करण ॥ इति ॥

रामायणआदि आरण्यकाण्ड रामस्सगुणशरणम् हुजूरीस्तोत्रअत्रिमुनिकृत ॥
सो० ॥ प्रभुआसनआसीन भरिलोचन शोभा निरखि । मुनिवर परमप्रवीन जोरि पाणिअस्तुति करत ॥

न० छं० ॥ नमामिभक्तवत्सलं कृपालु शीलकोमलं ॥ भजामितेपदाम्बुजं अकामिनांस्वधामदं ॥ १ ॥ निकामश्यामसुन्दरं भवांबुनाथमन्दरं ॥ प्रफुल्लकंजलोचनं मदादिदोषमोचनं ॥२॥ प्रलम्बबाहुविक्रमं प्रभोप्रमेयवैभवं॥निषङ्गचापशायकं धरेत्रिलोकनायकं॥३॥दिनेशवंशमंडनं महेशचापखण्डनं॥ मुनीन्द्रसन्तरंजनं सुरारिवृन्द भंजनं ॥ ४ ॥ मनोजवैरिवन्दितं अजा-

दिदेवसेवितं ॥ बिशुद्धबोधविग्रहं समस्त दूषणापहं ॥ ५ ॥ नमामिइन्दिरापतिं सुखाकरंसतांगतिं ॥ भजेसशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं ॥ ६ ॥ त्वदंघ्रिमूलये नरा भजन्तिहीनमत्सरा॥ पतन्तिनोभवार्णवे वितर्कबीचिसंकुले ॥ ७ ॥ विविक्त वासनाः सदा भजन्तिमुक्तयेमुदा ॥निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्तितेगतिस्वकं ॥ ८ ॥ तमेकमद्भुतंप्रभुं निरीहमीश्वरंविभुं ॥ जगद्गुरुंचशाश्वतं तुरीयमेवकेवलं ॥ ९ ॥ भजामिभाववल्लभं कुयोगिनांसुदुर्लभं ॥ स्वभक्तकल्पपादपं समंस्वसेव्यमन्वहं ॥ १० ॥ अनूपरूपभूपतिं नतोहमुर्विजांपतिं ॥ प्रसीदमेनमामिते पदाब्जभक्ति देहिमे ॥ ११ ॥ पठन्तियेस्तवंइदं नरादरेणतेपदम् ॥ व्रजन्तिनात्रसंशयः त्वदीय भक्तिसंयुताः ॥ १२ ॥

दो० ॥ विनतीकरिमुनिनाइगिर कह

करजोरिबहोरि ॥, चरणसरोरुहनाथजनि कबहुँतजैमतिमोरि ॥ १ ॥

१३ जबते रामचरणचितदीन्हा ॥ १ ॥ छूट्योभ्रांतिजनितसंसृतदुखबनप्रमोदघर कीन्हा ॥ २ ॥ नित्यानन्दबिहारएकरस वृद्धहोइनहिंछीन्हा ॥ ३ ॥ सेवतशिवस-नकादिकनारद ब्रह्मादिकपरवीना ॥ ४ ॥ प्रकटएकरघुवीर राम सोइ ज्यों पट सूत्र नवीना ॥ ५ ॥

(विनयपत्रिका) जानकीशकी कृपा जगावतीसुजानजीव जागुत्यागि मूढतानुरागश्रीहरे ॥ करिविचार तजि विकार भजिउदाररामचन्द्र भद्रसिन्धु दीनबन्धु वेदविदितरे ॥ १ ॥ मोह मयकुहूनिशा विशाल काल बिपुलव्याल सोयो खोयो सो अनूपरूपस्वप्नजूपरे ॥ अब प्रभात प्रकट ज्ञान भानके प्रकाश बास नाश रोग मोह दोष निबिड़तम

टरे ॥ २ ॥ भागे मदमाल चोर भोरजानि यातुधान काम क्रोध लोभ क्षोभ निकर अपडरे ॥ देखतरघुवर प्रताप बीतेसंताप पाप तापत्रिविध प्रेम आपुदूरही करे॥३॥ श्रवणसुनि गिरागँभीर जागे अतिधीर वीर वर बिरागतोष सकलसन्तआदरे ॥ तुलसिदास प्रभुकृपाल निरखि जीवजन बिहाल भंज्यो भवजाल परम मङ्गला-चरे ॥ ४ ॥ ७४ ॥

खोंटो खरो रावरोहौं रावरे सों झूठो क्यों कहौंगो जानौ सबहीके मनकी॥करम बचन हिये कहौं न कपट किये ऐसी हठ जैसी गांठी पानी परे सनकी॥ १ ॥ दूस-रौभरोसो नाहिं बासना उपासनाको आ-शनाविरञ्चिसुरनरमुनिगनकी ॥ स्वारथ के साथी मेरे हाथी श्वान लेवादेई काहूतो न पीर रघुवीर दीनजनकी ॥ २ ॥ सांप सभा सावरलवारभये देवदिव्य दुसहसा-

सतिको जय आगेहियातनकी॥ सांचेप-
रोपायोपान पंचनमेंपनप्रमानतुलसी चा-
तकआशरामश्यामघनकी ॥ ३॥ ७५ ॥

(१४)ऐसा यहदेश दिवानाहै॥ १ ॥स-
तगुरुशरणसदाभयत्यागो अचल परमअ-
स्थानाहै ॥२॥ मृगजलसमसबदृश्यपदार-
थक्याबंदे बौरानाहै ॥ ३ ॥ परे हंस जेहि
कहतसोई तुम भ्रांतिछोंड़िनिर्बानाहै॥४॥
सबमें तुही तुही में सबहै नहिं कहुँ आना
जानाहै ॥ ५ ॥ कहै रघुवीर शरणमस्ता-
ना बुन्द में सिन्धुसमानाहै ॥ ६ ॥

(१५)निशिदिनबरसत अमृत सारे॥१॥
मधुर मधुर ध्वनिबादर गरजै कोटिनचन्द
सदृश उजियारे॥ २ ॥ सुरति कटोरीभरि
भरि पीवै पियत पियत छकि अमर जि-
यारे ॥ ३ ॥ मगनानन्द स्वरूप अखण्डित
पिया हेरतभयो आपु पियारे ॥ ४ ॥

(१६) अस्तिभाति प्रियपूरणसोई ॥१॥

अस्तिभातिक्रिया नामरूप यहपंचअंश श्रुतिगुरु नहिंगोई ॥ २॥ तीनअंश सत चिद आनँदघन युगलअंश भ्रमकल्पित होई ॥ ३ ॥ ज्योंमरुथलभ्रमजलभासत है तातेभूमिनगीलीजोई ॥ ४ ॥ नामरूपक्रियाज्यों व्यभिचारी तातेचेतनंहानि नहोई ॥ ५ ॥ मगनानन्द बुद्धिकोसाक्षी आपै आपु द्वितियासबखोई ॥ ६ ॥

१७ नामकोजपैयासर्वज्ञहोतरामनामकोप्रभावबाल्मीकनेबतायोहै ॥ १ ॥ कीन्ह्योहैभविष्यकाव्य सियारामगुणग्राम विविधविधिसुनायोहै॥ २ ॥ सोईरामपारब्रह्मअक्षरअनूपगुरुदेवनेलखायोहै ॥ ३ ॥ बासुदेवमितिख्यातभेदरहितवेदनने गायो है ॥ ४ ॥ जान्योनाउपासनामैंनामछांड़ि जाकेप्रकाशब्रह्मआतमदरशायोहै ॥ ५ ॥ तातेरघुबीरअभयनामको प्रभावजानि कुम्भजरकारभववारिधिसुखायोहै ॥ ६ ॥

१८ चेतनमें चितदृष्टिप्रभाषत दृष्टिमेंसृष्टि अनन्तनईहै ॥ १॥ दृष्टिकेनाशतसृष्टिवि- नाशतदृष्टिप्रकाशतसृष्टिभईहै ॥ २ ॥ दृष्टि कोसाक्षीसदानिर्लेप अरूपअजक्रियमोद मईहै॥ ३ ॥ रघुवीरसोज्ञानअखण्डितरूप मनन्दितपूरणब्रह्मसोईहै ॥ ४ ॥

१९ आतमब्रह्मज्ञानीते न और दूजो ज्ञानीजान अहंगृहध्यानते न और फिर योगहै॥१॥ सत्यकोसमानज्ञान मायाको अधारजानचेतनविशेषज्ञान द्रष्टाअधिष्ठा- नहै॥ २॥ चेतनबिवर्त्तअरु मायापरिणाम मान ज्ञाताज्ञानज्ञेययह त्रिपुटीसमाजहै ३॥ रज्जूकेप्रत्यक्षकाल अहि जैसेरज्जूरूप चेतनप्रत्यक्षसमय मायाब्रह्मरूपहै॥ ४॥ आत्मास्वरूपसोतोसतचितआनंद है कहै रघुवीरसोहं स्वयंप्रकाशहै॥ ५॥

२० नहींमेरीजातिपांति न मैं काहू मिलाचाहौंनहींकोईमेरोहै न मैंहौं कोऊ

कामको ॥ १॥ लोकपरलोकउभयबुद्धिको विलासजान छोंड़िदेविकारश्रीरघुवीरनिर्विकारहैं ॥ २ ॥

२१ मैंकहताहूंआंखिनदेखी तू कहता हैकागदलेखी मेरोतेरोमनुवांकैसेएक होयरे ॥ १ ॥ मैंकहताहूंजागतरहिये तूंजाताहैसोयरे मेरोतेरोमनुवांकैसेएकहोयरे ॥ २ ॥ मैंकहता निर्मोहीरहिये तूजाताहैमोहिरे मेरोतेरोमनुवांकैसेएकहोयरे ॥ ३ ॥ मैंकहतासुरभावतराहिये तूदेताउरभायरे मेरोतेरोमनुवांकैसेएकहोयरे ॥ ४ ॥ मैंकहताहूंदृश्यपदारथ तूअनदेखीजायरे मेरो तेरोमनुवांकैसेएकहोयरे॥ ५॥ मगनानन्द शोधभलदेख्योआनँदरूपअपाररे मेरोतेरो मनुवांकैसेएकहोयरे ॥ ६ ॥

२२ जागुरीमेरीसुरतिसुहागिल १ ॥ कासोवैतूकोहमोहमें उठिकैभजनमें लागुरी ॥ २ ॥ दैचितश्रवणनसुनतैंअनहद

होतछतीसौरागुरी ॥ ३ ॥ दोउकरजोरि चरणनशीशधरु भक्तिअभयपदमांगुरी ४ ॥ मगनानन्दकहैकरजोरे जगकोपीठदैकै भागुरी ॥ ५ ॥

गरुड़चर्मदशा रामायणउत्तरकाण्ड १२६ ॥ तासुचरणशिरनाइकर प्रेमसहितमतिधीर । गयउगरुड़बैकुण्ठतब हृदयराखिरघुबीर ॥ शिवउवाच ॥ सोकुलधन्यउमासुनु जगतपूज्यसुपुनीत ॥ श्रीरघुवीरपरायण जेहिनरउपजबिनीत = १२८ ॥

श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृत चर्मरामायण ॥ छन्द ॥ पाईनगतिकेहिपातित पावन रामभजिसुनुशठमना ॥ गणिका अजामिलव्याधगृद्ध गजादि खलतारेघना ॥ १ ॥ आभीरयमनकिरातखल श्वपचादि अतिअघरूपजे ॥ कहिनामबारेकतेपिपावन होहिंरामनमामिते ॥ २ ॥

रघुबंशभूषणचरितयह नरकहहिं सुनहिं जे गावहीं ॥ कलिमलमनोमलधोइबिनु श्रमरामधामसिधावहीं ॥ शतपंचचौपाई मनोहरजानिजेनरउरधरैं ॥ दारुणअविद्यापंचजनितविकारश्रीरघुबरहरैं ॥ ४ ॥ सुन्दरसुजानकृपानिधान अनाथपरकर प्रीतिजो ॥ सोएकरामअकामहितनिर्वाणप्रदसमआनको ॥ ५ ॥ जाकीकृपालव लेशते मतिमन्दतुलसीदासहूं॥ पायोपरम विश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूं ॥ ६ ॥

देखो विनय ॥ ऐसेउसाहबकीसेवा संहोतचोररे ॥ १ ॥ रीझेबशहोतखीझे देतनिजधामरे ॥ ११॥७१ ॥

दो० मोसमदीन न दीनहित
तुमसमानरघुवीर ॥
असबिचाररिघुबंशमणि
हरहुबिषमभवभीर ॥ १ ॥
कामिहिनारिपियारिजिमि

लोभिहिप्रियजिमिदाम ॥
तिमिरघुवीरनिरन्तर
लागहुप्रियमोहिंराम ॥ २ ॥
इति ॥
असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

श्रीरघुवीर ॥
अथ तृतीयकाण्ड(मौज१) प्रारम्भः ॥

अब गोस्वामी प्रमोदबनबिहारी के बिहार स्वरूप मौज का प्रारम्भ है जो असमर्थ उत्साह का उमंगयोग ॥

प्रमाण ॥ मगनध्यानरसदण्डयुगपु निमनबाहिरकीन्ह ॥ रघुपतिचरितमहे तब हर्षितबरणेलीन्ह ॥ १ ॥

मिती द्वितीय चैतसुदी अष्टमी गुरुबार (तथा तारीख १९ अपरैल सन् १८८८ ई०) जो रामनवमीका मुख्यद्वारा ॥ इस प्रमोदबनबिहारसंहिता को ॥ श्रीचित्र-

कूटतीर्थमध्ये ॥ श्रीरामधामक्षेत्रविषे ॥ श्रीसद्गुरु गोस्वामी ≡ रघुवीर ≡ को सुनाया ॥

(१) मेरेको डर है तो एक अधर्म्म-मात्रका ॥ अरु आकांक्षा है तो एक राम मिलनमात्रकी ॥

(२) देखो श्लोक २७ अध्यायपंचम॥ स्पर्शान्कृत्वाबहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरेभ्रुवोः ॥ प्राणापानौसमौकृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥ २७ ॥ यह श्लोक गीतात्मक राजयोग प्रकरणका प्रतिलोम अवधि है जिसको विस्तारपूर्वक देखनाहो सो षष्ठमअध्याय गीता (तथा स्वप्रकाश संहिता जो श्रीरघुवीरकृत उपदेश) द्वारा अवलोकन बलु प्रत्यक्ष अनुभव करै ॥

(प्रत्यक्षप्रमाण) श्लोक २८, २९ अध्याय पञ्चम (प्रत्यक्षनेम) अवजानन्तिमांमूढा मानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परम्

पुहीबाचो ॥ हियेहेरितुलसीलिखी सो स्वभावसहीकरि बहुरि पूछियहि पांचो पद ३ ॥ विनय नम्बर २७७ ॥

(सतगुरुनामनिरूपण) रामायणं ॥ जनमनमञ्जुकञ्जमधुकरसे ॥ जीहयशोमतिहरिहलधरसे ॥ १ ॥ तिलक कंठवर्ती सूक्ष्म जिह्वा का नाम जीह है ॥

सुमिरिपवनसुतपावननामू ॥ अपने बशकरि राखे रामू ॥ १ ॥ कहत सुनत समुझत सुठिनीके ॥ रामलषणसम प्रिय तुलसीके ॥ १ ॥ नामजीहजपि जागहिं योगी ॥ विरतिविरञ्चिप्रपञ्चवियोगी १॥ ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा ॥ अकथ अनामयनामनरूपा ॥ १ ॥ जानाचहहिं गूढ़गतिजेऊ ॥ नामजीहजपि जानहिं तेऊ ॥ १ ॥

(स्वप्रकाशसंहिता श्रीरघुवीरउवाच) जैसेदृष्टि अर्द्धउन्मेलननासिकाग्रसे यत्न

कल्पना करिकै त्रिकुटी में प्रवेश करती है ॥ उसीतरह अनुमानमात्र शब्द तालू से जिह्वाग्रपर आइके मध्यजिह्वा से भावनामात्र मध्यतालूद्वारा मध्यत्रिकुटी चक्रको प्राप्तहोगा ॥ और दृष्टिको चित्त के साथै सम्बन्ध है ॥ और दांतसे दांत मिले रहैं ॥ रामनाममणिदीपधरु जीह देहरीद्वार ॥ तुलसी भीतरबाहिरौ जो चाहसि उजियार १ ॥
मूल मंत्रश्रीरघुबीर है
असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

इति ॥

———

श्रीरघुवीर ॥

मौज ३ ॥

१ (रामायणं बालकाण्ड उमाशम्भु सम्बाद) उमारामविषयिकअसमोहा ॥ नभतमधूम धूरिजिमिसोहा ॥ १ ॥ विषय करणसुरजीवसमेता ॥ सकलएकतेएक सचेता॥ २ ॥ सबकरपरमप्रकाशकजोई॥ रामअनादिअवधपतिसोई ॥ ३ ॥ जगत प्रकाश्यप्रकाशकरामू ॥ मायाधीशराम गुणधामू ॥ ४ ॥ जासुसत्यतातेजड़माया॥ भास्यसत्यइवमोहसहाया ५ ॥

दो० रजतसीपमहँभासजिमि यथा भानुकरबारि ॥ यदपिमृषातिहुंकालसोइ भ्रमनसकैकोउटारि १२६ ॥

इहिविधिजगहरिआश्रितरहई ॥ यदपि असत्यदेतदुखअहई ॥ १ ॥ जोसपनेशिर काटैकोई ॥ बिनुजागेदुखदूरिनहोई ॥ २ ॥ जासुरुपाअसभ्रममिटिजाई ॥ गिरिजा

सोइकृपालरघुराई ॥ ३ ॥ आदिअंतकोउ जासुनपावा ॥ मतिअनुमाननिगमअस गावा ॥ ४ ॥ बिनुपदचलैसुनैबिनुकाना ॥ करबिनुकर्मकरैविधिनाना ॥ ५ ॥ तीनचौपाई ॥ दोहा जेहिइमिगावहिंवेदबुधजाहिधरहिंमुनिध्यान ॥ सोइदशरथसुतभक्तहितकोशलपतिभगवान १२७ ॥ फेर देखोआठचौपाई अरुएकदोहा १२८ ॥

शशिकरसमसुनिगिरातुम्हारी ॥ मिटामोहशरदातपभारी ॥ १ ॥ तुमकृपाल सबसंशयहरेऊ ॥ रामस्वरूपजानिमोहिं परेऊ ॥ २ ॥ नाथकृपाअबगयउबिषादा ॥ सुखीभयउँप्रभुचरणप्रसादा ॥ ३ ॥

श्रीसतगुरुरघुबीरायनमः इति ॥

(२ गीतायां) इदंशरीरंकौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञमितितद्विदः ॥ १ ॥ क्षेत्रज्ञंचापिम

विद्धसर्वक्षेत्रेषुभारत ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञा नंयत्तज्ज्ञानंमतंमम ॥ २ ॥

ज्ञेयंयत्तत्प्रविक्ष्यामियज्ज्ञात्वामृतमश्न ते ॥ अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्य ते ॥ १२ ॥ सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम् ॥ सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्व मावृत्यतिष्ठति ॥ १३ ॥ सर्वेन्द्रियगुणा भासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ॥ असक्तं सर्व भृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच १४, १५ । उ- पद्रष्ठानुमंताच भर्ताभोक्तामहेश्वरः ॥ परमात्मेतिचाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः २२, २३, ३१ ॥ मंत्रश्रीरघुबीर है ॥

(दृष्टान्त) यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादा काशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहे तथात्मानोपलिप्यते ३२ ॥ यथाप्रकाश यत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥ क्षेत्रंक्षेत्री तथाकृत्स्नं प्रकाशयतिभारत ३३ ॥ क्षेत्र क्षेत्रज्ञयोरेवमंतरंज्ञानचक्षुषा ॥ भूतप्रकृति

मोक्षंच येविदुर्यांतितेपाम् ३४ ॥ क्षेत्रक्षेत्र ज्ञयोगोनामत्रयोदशोऽध्यायः१३ ॥ इति ॥

(३अप्तमर्थविनय) जैसा सतगुरु श्री रामश्रीकृष्णहै ॥ तैसाहीतद्रूपप्रत्यक्षसत गुरु श्रीरघुवीरममअसमर्थगोस्वामीहै ॥

श्रीरघुवीरउवाच ॥ प्रकटएकरघुवीर रामसोइज्यों पटसूत्रनवीना ॥ जानिलेहु जो जाननहारे ॥ लखै यहदेश गुरुज्ञानी जिन्होंनेमनसँभाराहै ॥ यह अगमअलख नेमहै ॥ मगनानन्द गुरु गमकी अलख गतिअपारोवाराहै ॥ श्रीविवेकी मगना-नन्दपरमहंसनाम श्रीरघुवीरायनमः ॥ असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

(श्रीरघुवीरं)

मौज ४ ॥

(विरद)कहैरघुवीरशरणमस्ताना।बुन्दमें सिंधुसमानाहै ॥ १४ पद ॥ बुन्दनामअनु स्वार जो रेफपति یعنی نقطہ ، دایرہ کا میانہ مرکز

देखिये देखिये हेतातसुहृदभ्रातस्वयंज गदत्रातगोस्वामी श्रीतुलसीदासकृतबर्त्त-मान आचार्य्यब्रत ॥ सुलभस्मृति॥सहिजा श्रुति । संस्कृत नहीं भाषा रामायण मध्ये अरण्यकाण्ड बिषे जो श्रीरामचन्द्र शबरि नारायण संवाद ॥ सगुणहुजूरी नादबलु अनुभवगम्यआह्लाद ॥ जिसमें नवधा भक्तिका प्रत्यक्ष गुणानुवादहै ॥ बलिहारी विष्णुपरमपादहै (तिलक जो संन्यस्थं की सुगतिहै अनन्य भगवत् की स्वमति है ॥ तत देखिये कपि रामं संवाद ॥ जो किष्किंधा तिष्ठति है हुजूर इस अगम सनेही हुजूरी प्रसंग मध्ये अतिशय अति

कीभी मतिबिपतिहै चेत दुर्गतिदुर्गतिहै ॥ भरतबुद्धिमहिमाजलराशी । मुनि मति तीरठाढ़िअबलासी ॥ बाल विनय सुनि करिकृपा रामचरणरतिदेहु ॥ देखि पवन-सुतपतिअनुकूला । हृदय हर्ष बीते सब शूला ॥ १ ॥ टेक ॥ करिहैंरामभावतोमन को सुखसाधन अनयास महाफल)

आरण्यकाण्डे हरिगीतछन्दे ॥ कहिक थासकल विलोकि हरिमुखहृदयपदपङ्कज धरे ॥ तजियोगपावकदेहहरिपदलीनभइ जहँनहिंफिरे ॥ १ ॥ (गीतायां नतद्भा सयते सूर्यो नशशाङ्को नपावकः ॥ यंद्गत्वा ननिवर्तन्ते तद्धामपरमम्मम ॥ ६ ॥ अ०) नरविविधकर्मअधर्मबहुमति शोकप्रद सब त्यागहू ॥ विश्वासकरि कह दासतुलसी रामपदअनुरागहू ॥ २ ॥ (बलिहारी॥प्रकट एकरघुवीररामसोइ जिमिपटसूत्रनवीना) दोहा ॥ जातिहीनअघजन्ममहि

मुक्तकीन्हिअसनारि ॥ महामन्दमति सुखचहसि ऐसे प्रभुहिं बिसारि ॥ १ ॥

श्रीरघुवीरार्प्पणमस्तु इति ॥

असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

श्रीरघुवीर ॥

मौज ५ ॥

(श्रीरामलषणवीरदशा) पुरुषसिंह दोउवीरहर्षिचलेमुनिभयहरण ॥ कृपा-सिंधुरणधीरअखिलविश्वकारणकरण १ ॥

(अङ्गद रावण बाद) सुनुशठभेदहोइ मनताके । श्रीरघुवीरहृदयनहिंजाके ॥

(विनयपत्रिका) विमलहृदयभवनकृतशान्तिपरयङ्कशुभ शयनविश्रामश्रीरामराया । क्षमाकरुणाप्रेमस्वतन्त्रपरिचारका यत्रहरितत्रनहिंभेदमाया ॥ ५ ॥ बलुसम्पूर्णविनय नम्बर ४६ ॥

(गीतायां)ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेर्जुन तिष्ठति ॥ भ्रामयन्सर्वभूतानियंत्रारूढा

निमायया ॥ श्लोक ६१, ६२, ६३, ६४, ६५,
सर्वधर्म्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज ॥
अहंत्वांसर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशु
चः ६६ अध्याय अष्टादश ॥

(प्रत्यक्षप्रमाण) प्रकटएकरघुवीरराम
सोइज्योंपटसूत्रनबिना ॥

(विनय) नरकअधिकारममघोरसंसारत
मकूपकहिभूपमैंशक्तिआपानकी॥ दासतुल
सीसोउत्रासनाहिंगनतमनसुमिरि गुहगी
धगजज्ञातिहनुमानकी॥५॥ सम्पूर्ण विनय
२०६ ॥ देखियेजोसिद्धान्तमध्येसिद्धान्त॥

(रामायणं) श्रीगुरुपदनखमणिगण
ज्योती ॥ सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती ॥
जो वेदान्त मध्ये वेदान्त ॥

(गीतायां)नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवसुच
क्षुषा ॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमै
श्वरम् ॥ ८ ॥ अ० ११ ॥ श्रीरघुवीरचरणा-
र्पणमस्तु असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

श्रीरघुबीरं ॥

मौज ६ ॥

(तिलक) श्रीगुरुपदनखमणिगणजोती । सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती ॥ नर रूपहरि पदकंजकानखाग्र यही मुख्य द्वाराहै किबिरहीकाचित्तनखसेशिखपर्यंत रमणकरके परिपूर्ण बिश्रामको प्राप्तहो ॥ जैसे स्वमाताके गोदमें अतिलघुबालक स्वपुत्र ॥ तात्पर्य रघुहृदय निवासीवीरहै अरु बीरहृदय निवासीरघु ॥ यहीपरमार्थ मध्ये परमार्थकीअवधिहै (यहीसाम्या-रहस्यकें सगुण शरणंहुजूरीकाएकस्वतंत्र सेवन) ॥

(१) (गीतायां) अ० नवम ॥ समोहं सर्वभूतेषुनमेद्वेष्योस्तिनप्रियः ॥ ये भजं-तितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाप्यहम् ॥ २९ ॥ ३२,३३,३४ ॥

(२) जैसे अन्नादिकरके यथोचितशरीर

मात्रके पालनपोषणहोमें का प्रवृत्तीद्वारा मुख्य एकमुख है ॥ तथा उदरवर्तीमल त्यागका निवृत्तीद्वारा गुदा है ॥ प्रमाण गीतायां अध्यायपंचदश श्लोक १४, १५, १६, १७॥

(३) रामउवाच किष्किन्धा ॥ समदर्शी मोहिंकह सबकोई । सेवकप्रिय अनन्य गतिसोई ॥ दो० सोअनन्यजाकेअसमति नटरै हनुमन्त ॥ मैं सेवकसचराचर रूप राशिभगवन्त ॥ १ ॥ श्रीरघुबीरायनमः ॥

अनुगामी शिवानन्द ॥

(श्रीरघुवीरं) प्रमोदबनबिहारं ।

मौज ७ ॥

(सगुणसिद्धांत) विनयपत्रिकायां ॥ कालकलि जनितमल मलिनमनसर्बनर मोहनिशिनिविड़ यमनान्धकारं ॥ विष्णु यशपुत्रकल्की दिवाकर उदित दास तुलसी हरणविपतिभारं ॥ चर्मपद ॥५२॥

(रामायणं) चर्मगोस्वामिचर्मदशा ॥ जाकीकृपालवलेशते मतिमन्दतुलसीदास हूं । पायोपरमबिश्रामराम समान प्रभु नाहींकहूं ॥ चर्मउत्तरकाण्ड ॥ गोप्यमध्ये गोप्यकेनाम निरूपणमें पुनरोक्तादिदोष का कदापि भयनहीं श्लोक १ अ० ॥ १४ ॥

(सगुणसाम्या रहस्यनामअगमसनेही उपदेश)जबलगि सतगुरुमें रामते अधिक बोधत्व (जोअगमसनेह) नहींहोता अरु बिबेकी गोस्वामी नाम सतगुरु (जो अगमसनेही मगनानन्दश्रीरघुवीर) अपु-

नाइके उरलाइ नहीं लैता तबलगि ज्ञान सुफल नहीं होता॥ यहअपेलनेमहै॥हुजूर यहां अर्द्धउन्मेलनकी भीं गम्य नहीं॥

(निंर्णयनामसगुणवेदान्त) काहे कि रामको आंखिसे देखा नहीं अरु सतगुरु महाराज(श्रीरघुवीर)को आंखिसेदेखाहै॥ मेरेमन कछु अस बिश्वासा। रामते अधिक रामके दासा॥ (राम लषण संवाद)॥ नाथदैवकरकवनभरोसा।सोखियसिन्धुकरियमनरोसा॥ कादरमनकरएकअधारा। दैवदैवआलसीपुकारा॥ अंतसुंदरकाण्ड॥

(रघुवीरउवाच) पृष्ठ पूर्वोक्त॥ जबते रामचरण चितदीन्हा॥ १॥ छूट्योभ्रान्तिजनितसंसृतदुखबनप्रमोदघरकीन्हा॥ २॥ नित्यानन्द विहार एकरस वृद्धहोइ नहिंछीन्हा॥ ३॥ सेवतशिवसनकादिक नारदब्रह्मादिकपरवीना॥४॥प्रकटएकरघुवीररामसोइज्योंपटसूत्रनवीना॥५॥इति॥

(श्रीरघुवीरं) (प्रमोदबनबिहारं)

मौज ८ ॥

(रामात्मक सगुण साम्याकटाक्ष)
रामायणं अयोध्या ॥ सेवहिं प्रभु-(राम) सिय अनुजहिं (लक्ष्मण) कैसे ॥
पलकविलोचन गोलकजैसे ॥ १ ॥

(कृष्णतुलसी सगुण साम्यारहस्य)
कौनतिनकीकहैजिनके सुकृत अरु अघदोउ । प्रकटपातकरूपतुलसी शरणराख्यो सोउ ॥ (कपिदशा) ॥
तापरमैंरघुवीरदुहाई । जानौंनहिंकछुभजनउपाई ॥ रामकटाक्ष ॥ सुनुकपिजिय जनिमानसिऊना । तैंममप्रिय लक्ष्मणबे दूना ॥ १ ॥ किष्किंधा ॥

(सगुणप्रत्यक्षप्रमाण) प्रकट एक रघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्रनवीना ॥
(साक्षात् देखियेहेगरीबनिवाजगरीबकी गरीबी) मेरीसुधारीसोसबभांती ॥ जासु

कृपानहिंकृपाअघाती ॥ १ ॥ कुलिशहुचाह
कठोरअतिसुमनहुकोमलताहि ॥ चितख-
गेशरघुबीरअस समुझिपरैकहुकाहि॥ १ ॥
सर्वसरामंमईजोभईरे रेरेरामहि सर्बमई
रे ॥ रैनितिमिरमय दिवसभानुमययोंही
सर्वसरममईरे ॥ १ ॥ तातेरघुवीरअभय
नामकोप्रभावजानि कुम्भजरकारभववा-
रिधिसुखायोहै ॥ १ ॥ कहैरघुवीरशरण
मस्ताना बुन्दमेंसिंधुसमानाहै ॥ १ ॥

(तत गीतायां) अर्ज्जुनउवाच ॥
दृष्ट्वेदंमानुषंरूपं तवसौम्यंजनार्दन ॥ इदा
नीमस्मिसंवृत्तः सचेताःप्रकृतंगतः ॥ ५१
अ० ११ ॥

(श्रीकृष्णउवाच) सुदुर्दर्शमिदंरूपं
दृष्टवानसियन्मम ॥ देवाअप्यस्यरूपस्य
नित्यंदर्शनकांक्षिणः ॥ ५२, ५३, ५४, ५५
श्लोकअध्यायएकादश ॥ तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ
यशोलभस्व जित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृ-

द्धम् ॥ मयैवेतेनिहताःपूर्वमेव निमित्त मात्रंभवसव्यसाचिन् ३३ तत्पूर्वापर ३३, ३४ अ० ११ ॥

(श्रीकृष्णउवाच) तस्माच्छास्त्रंप्रमाणंतेकार्याकार्यविवस्थितौ ॥ ज्ञात्वाशास्त्र विधानोक्तं कर्म्मकर्तुमिहार्हसि ॥ २४ ॥ अध्याय षोडश ॥

(श्रीकृष्णशाश्वतगुरुउवाच) कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमेसमुपस्थितम् ॥ अनार्य्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥ क्लैव्यंमास्मगमःपार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ॥ क्षुद्रंहृदयदौर्बल्यंत्यक्त्वोत्तिष्ठपरन्तप ॥३॥ अध्याय द्वितीय २ ॥ असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

श्रीरघुवीरचरणार्पणमस्तु

तत्प्रमोदबनबिहारीमस्तु

एवमस्तु

श्रीरघुवीरं।

मौज ६ ॥

(रामायणलंका)इहांसुबेलशैलरघुवीरा॥
उतरेसेन्सहितअतिभीरा ॥ १ ॥ शैलश्रृंग
इकसुन्दर देखी ॥ अतिउतंगसमशुभ्रवि-
शेखी ॥ २ ॥ तहँतरुकिशलयसुमनसुहा-
ये ॥ लक्ष्मणरचिनिजहाथडसाये ॥ ३ ॥
तापररुचिरमृदुलमृगछाला ॥ तेहिआस-
नआसीनकृपाला॥ ४ ॥ प्रभुकृतशीशक-
पीशउछंगा ॥ बामदहिनदिशिचापनिषं-
गा ॥ ५ ॥ दुहुँकरकमलसुधारतबाना ॥
कहलंकेशमन्त्रलगिकाना ॥ ६ ॥ बड़भा-
गीअङ्गदहनुमाना ॥ चरणकमलचापत
विधिनाना ॥ ७ ॥ प्रभुपाछेलक्ष्मणबीरा-
सन ॥ कटिनिषङ्गकरबाणशरासन ॥ ८ ॥
दो० ॥ इहिविधिकरुणाशीलगुणधाम
रामआसीन ॥ धन्यसोनरयहध्यानरत
रहतसदालवलीन ॥ १ ॥ इति ॥

रावणरथीविरथरघुबीरा ॥ देखिविभीषणभयउअधीरा ॥ १ ॥ अधिकप्रीतिउरभासंदेहा ॥ बन्दिचरणकहसहितसनेहा ॥ २ ॥ नाथनरथनाहींपदत्राना ॥ केहिबिधिजीतब रिपुबलवाना ॥ ३ ॥ सुनहु सखा कह कृपानिधाना ॥ जेहि जय होइ सो स्यन्दनआना ॥ ४ ॥ शौरजधर्म्मजाहिरथचाका ॥ सत्यशीलदृढध्वजापताका ॥ ५ ॥ बलविवेकदमपरहितघोरे ॥ क्षमा दयासमतारजुजोरे ॥ ६ ॥ ईशभजनसारथीसुजाना ॥ विरतिचर्मसन्तोषकृपाना ॥ ७ ॥ दानपरशुबुधिशक्तिप्रचराडा ॥ बरविज्ञानकठिनकोदराडा ॥ ८ ॥ संयमनियम शिलीमुखनाना ॥ अमलअचलमनत्रोणसमाना ॥ ९ ॥ कवचअभेदविप्रपद पूजा ॥ इहिसमविजयउपाय न दूजा१०॥ सखाधर्म्ममयअसरथजाके ॥ जीतनकहँ न कतहुँरिपुताके ॥ ११ ॥

दो० महाघोरसंसाररिपुजीतिसकैकोबीर॥ जाकेअसरथहोइ दृढ सुनहु सखा मति-धीर॥ १॥ सुनत विभीषण प्रभु बचन हर्षिगहेपदकंञ्ज॥ इहिविधि मोहिं उपदेश किय राम कृपासुखपुञ्ज॥ २॥ इति॥ गीतायां (जिसकासरलवार्तिकातिलक प्रमोदबनबिहारनामकहै) अर्जुनउवाच॥

मू०॥ एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वाम्पर्य्युपासते॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तं तेषांकेयोगवित्तमाः॥ १॥

टी०॥ हे नररूपहरि हे अशरणशरण इस प्रकार आपके निरन्तर युक्त-सगुण और निर्गुणउपासकोंमें कौन श्रेष्ठहैं॥ १॥

श्रीभगवानुवाच॥ मू०॥ मय्यावेश्य मनोयेमांनित्ययुक्ताउपासते॥ श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयुक्ततमामताः॥ २॥

टी०॥ हे तात नरव्याघ्रवीर अर्जुन जो पुरुष अपने मनको मैं सगुणब्रह्ममें एकाग्र

कर सगुणसाम्या श्रद्धा (भक्ति) समेत नित्य युक्तहों में साकार ब्रह्मको निरन्तर सेवन चिंतन करतेहैं वे अत्यन्त श्रेष्ठहैं ॥

मू० ॥ येत्वक्षरमनिर्देश्य मव्यक्तंपर्युपासते ॥ सर्वत्रगमचिंत्यंचकूटस्थमचलं ध्रुवं ॥ ३ ॥ संनियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः ॥ तेप्राप्नुवन्तिमामेव सर्वभूतहितेरताः ॥ ४ ॥

टी० ॥ जो पुरुष सम्पूर्ण इन्द्रियों को आधीनकर सर्वत्र सम बुद्धिवाले और सम्पूर्ण प्राणियों के हित में प्रीतिवाले हो अनिर्देश्य अव्यक्त सर्वत्र व्यापक अचिंत्य कूटस्थ अचल ध्रुव ऐसे निर्गुणब्रह्म को सर्वदा चिन्तन करते हैं वे भी मुझेही प्राप्त होते हैं ॥ ३, ४ ॥

मू० ॥ क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ॥ अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥

टी० ॥ निर्गुण ब्रह्मकी उपासना में अत्यन्त क्लेश है इसलिये देहाभिमानी पुरुषोंको निर्गुण ब्रह्म अत्यन्त कठिनता से प्राप्तहोसक्ता है ॥ ५ ॥

विनयपत्रिका गोस्वामीकृत ॥ नाहिंनेनाथ अवलम्बमोहिंआनकी ॥ कर्म मनवचनसत्यकरुणानिधे एकगतिराम भवदीयपदत्रानकी ॥ १ ॥ कोहमदमोह ममतायतनजानिमन बातनहिंजातकहि ज्ञानविज्ञानकी ॥ कामसंकल्पउरनिरखि बहुबासनहिं आशनाहिंएकहूआंकनिर्वान की ॥ २ ॥ वेदबोधितकर्मधर्मबिनुअगम अति यदपिजियलालसाअमरपुरजान की ॥ सिद्धसुरमनुजदनुजादिसेवतक-ठिन द्रवहिंहठयोगादियेभोगबलिप्रान की ॥ ३ ॥ भक्तिदुर्लभपरमशम्भुशुक मुनिमधुप प्यासपदकञ्जमकरन्दमधुपान की ॥ पतितपावनसुनस्वनामविश्राम

कृत भ्रमतपुनिसमुझिचितग्रन्थिअभिमा-
नकी ॥ ४ ॥ नरकअधिकारममघोरसंसा-
रतम कूपकहिभूपमैंशक्तिआपानकी ॥ दा-
सतुलसीसोऊत्रासनहिंगनत मनसुमिरि
गुहगीधगजज्ञातिहनुमानकी ॥ ५ ॥ २०९ ॥
गोस्वामीमौजकी निजमौजसे मौजमध्ये
परिपूर्णतः ॥

इति ॥

———*———

❀ (अरु श्रीरघुवीर प्रमोदवनविहार नामावार्तिक
सरलभाषा में गीताकातिलक भी चाही कि गोस्वामी
की कृपासे शीघ्रछपै अरु रसिकजनोंको दर्शनदेवै) ॥

श्रीरघुवीरं ।

परमार्थ सम्बन्धी व्योहारका व्याख्यान
(जो स्वधर्म्म स्वरूप व्योहार)

(उपदेश मूर्ख विषयी विषयको भी यथार्थभोगनानहींजानते ॥ १ अविद्या॥ २ असमता ॥ ३ रागद्वेष ॥ ४ अभिनिवेश ॥ यहीचार मूर्खताके अंगभूतहैं जैसेराहु॥)

हे भगवन् असमर्थ विनय॥ व्योहारही सिद्धकरना मुख्यप्रयोजनहै ॥ अरु परमार्थ तो विशुद्ध स्वरूपही है ॥ सो शुद्ध व्योहारहीका स्वयंफल विशुद्ध परमार्थ है ॥ जैसा कि शुद्ध बाल्यावस्थाका स्वतः फल विशुद्ध युवाअवस्था ॥

श्रीरामचन्द्र मर्यादा पुरुषोत्तमहैं व्योहार अरु परमार्थ सर्वमात्रमें ॥ रामही रामसाहै ॥ जैसारामरावणयुद्ध ॥

रामआचरण कृष्णउपदेश ॥ बसिये सदामगनानन्ददेश ॥ १ ॥

गोस्वामीमगनानन्द श्रीरघुवीराय नमः ॥ असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

श्रीरघुवीर ॥

(असमर्थ विनय) रामायणं उत्तर

दो० बिरतिज्ञानविज्ञानदृढ़ रामचरण अतिनेह ॥ बायसतनरघुपतिभगति मोहिंपरमसन्देह ॥ ७७ ॥

नरसहस्रमहँसुनहुपुरारी ॥ कोउइक होइधर्मव्रतधारी ॥ १ ॥ धर्मशीलकोटिन महँकोई॥ बिषयविमुखविरागरतहोई ॥२॥ कोटिविरक्तमध्यश्रुतिकहई ॥ सम्यक्ज्ञान सुकृतकोउलहई॥ ३॥ ज्ञानवंतकोटिनमहँकोई ॥ जीवनमुक्तसुकृतकोइहोई ॥ ४॥ तिनसहस्रमहँसबसुखखानी ॥ दुर्लभ ब्रह्मनिरत विज्ञानी ॥ ५ ॥ धर्मशील विरक्तअरुज्ञानी ॥ जीवन्मुक्तब्रह्मपरप्रानी ॥ ६ ॥ सबतेसोदुर्लभसुरराया॥ रामभक्तिरतगतमदमाया ॥ ७ ॥

नर ॥२॥ नरशरीरधरिजोंपरपीरा ॥ करहि तेसहहिंमहाभवभीरा ॥ ३ ॥ करहिंमोह बशनरअघनाना ॥ स्वारथरतपरलोकनशा-ना ॥ ४ ॥ कालरूपमैंतिन्हकहँताता ॥ शुभ अरुअशुभकर्मफलदाता ॥ ५ ॥

(२) सो देवता अरु राक्षस अथवा दैत्य मनुष्योंमेंही होते हैं ॥ देवता नाम अहिंसात्मक अहिंसापरमोधर्मः कृष्णका वाक्यहै ॥ राक्षस हिंसात्मक मांसाहारी कितोदयः ॥ सो विस्तारसे निषेधके त्याग करानेके निमित्त यामिनीविद्या में नीचे हाथजोरके बिनती करूंगा ॥

(३) (गीतायां) आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनः ॥ रस्यास्निग्धाः स्थिराहृद्याआहारःसात्त्विकप्रियाः ॥ ८ ॥ अ० सप्तदश ॥

अवस्था उत्साह बल आरोग्यता सुख प्रीति इनका बढ़ानेवाला ॥ रसयुक्त

(यहतिलकप्रमोदबनबिहारनामाहै)

(४) कृष्ण सतगुरुने षोडशअध्याय गीतामेंभलीप्रकार देवासुरसम्पात्तिका बिभागकियाहै अरु यहकिउनकों कैसे अति भयानक घोर दण्ड लोक अरु परलोक में कर्मानुसारभोगनेपड़तेहैं त्राहि ३॥श्लोक १६, २० आदि॥जोकोई अपने कायबचन मनआत्मासतगुरुपरभी दयानहीं करता वह आत्मघाती कसाई सैकड़ोंदर्जा अधिकहत्याराहै चांडालहै जैसाबौरानाकूकुर॥ असुरोंकीशास्त्रगुरूजीवमें बराबरनास्तिबुद्धिहीहोतीहै यहअसमर्थनेमहै श्लोक७,८ ६,१० अ०षोडश ॥

आश्चर्यहै कि कूकुरकाकाटामनुष्य प्रत्यक्ष बौरायजाताहै जिसकी कूकुराकार वृत्ती स्वतः सिद्धहोतीहै तैसीहीपरमार्थमें अनुभवगम्य दशाअवश्यसाक्षात्कारहोना चाहियेयहअनुभवकानेमहै ॥

پنجم التماس

(حرف الف) ای قدردان جاننا اتحاد راماین اور گیتا کا۔ اور اُسپر عمل کرنا۔ ایک سخت گذار امر ہی۔ اور یہ عمل در آمد قابل قابلان ہی۔ نہ قابل ناقابلان۔ (یعنی جاہلان وکاہلان وبدظرفان وتنگ ادیان ومتقلب ایان وشہوت پرستان) قطعہ علم چند انکہ بیشتر خوانی + ورعمل در تو نیست نادانی + نہ محقق بود نہ دانشمند + چار پائے بروکتابے چند + الغرض۔ مصرعہ۔ کہ داروی تلخ است دفع مرض + لیکن منقلبان قطب خود بخود بانقلاب می گرایند۔ وناحق الزام برگردن تقدیر یا عدم موجودگی مرشد وغیرہ وغیرہ می نہند۔ یعنے تلخ راشیرین وشیرین را تلخ می شمرند۔ ویارائے تجربہ ندارند۔ ونہ متحمل بارہمت ومنت بحضور ادیب برحق شدن می توانند۔ بسیار سخن خالی کردہ ام۔ فی البدیہہ سہ شور بختان بآرزو خواہند + مقبلان راز زوال نعمت وجاہ + خدایا حافظ وناظر باد۔ بدانکہ رب العالمین ضرور عادل رحیم است۔ وسرکوب بیرحمان وکاذبان۔ لیکن حیف کہ قایلان عدم وجود باری ملحاظ پابندی شرع۔

अथवा बाम मारगियों के धोखा देने से

یا ہمچو خواب خیالات قیاسیہ ووہمیہ۔ یا بطمع تن آسانی بذریعہ لذات محسوسیہ۔ یا بخوف تکلیف جسمی کہ شیوۂ زنان است۔ یا بتائید

بیان غاصبان کہ معلم گمراہی ہستند۔ وچنان رہزنے کہ بصورت
غمگسار وبسیرت خونخوار ہستند۔ یا بپایندی بیان پابندان انانیت
وشرک۔ رخ بجانب راہ راست کہ مراد است از طریقت وحقیقت
خاص بچشم دید خود۔ صدا آئمی آرند۔ مصرعہ۔ شنیدہ کی بود مانند دیدہ"
ہر عالمے را کہ اعتراض بر این معروضہ باشد۔ یا حوصلہ تردید امر خیر
مقابل معرکۂ بحث در آید۔ ورنہ مصرعہ جواب جاہلان باشد خموشی
(حرف ب) حیف است کہ گوشت خواران मांस भक्षी بوجہ خورش
صفات ذمیمہ یعنی بہیمی रजगुण وسبعی तमगुण علانیہ قاتل وخونخوار
مرشدان وپیشوایان خود شدہ اند۔ وعلانیہ خونریزی گردن اقوال
بزرگان نمودہ اند۔ وچہ یارای حیف۔ مثلاً کسی دلبند خود را وقتی
دشنام دہی بیاموزاند۔ وبوقت دیگر شکایت او نماید۔ بہ بین
ذابح البقر را در ہر ملت ومذہب بوجہ گناہ کبیرہ سخت ابتلاع کتابی است
ہر ناکسے کہ آن سند واجب کتابی را بشکند۔ ودعوی لغو بر اہل کتابی
خود نماید۔ جز خواری دارین چہ یابد۔ وآن کس کہ از تجربات مجرب
ہم تجربہ کار نشود۔ وشنوائی وپیروی امر راست ننماید۔ جز طمانچہ دو بدو برو
چہ یابد۔ جناب من فعلے نیست کہ جزائے ندارد۔ وعنصرے نیست
کہ فضائے ندارد مصرعہ چرا عاقل کند کارے کہ باز آید پشیمانی۔
ہوشیار باش۔ بدانکہ چہ نادر علمیست علم کلام کہ او را علم ابدان
ہم گویند واین علم ہم اصلی ونقلی است مثل अध्यात्म विद्या

آفتاب وشعل شعر چوتابنده کرمے که تابد زدور + تربے نور سے
شب زندلات نور + شعر در ظلمت شب ہرانچہ کردی کردی + در
روشنے روز ہمان نتوان کرد +

(حرف ج) مذمت شراب نوشی مثل گوشت خواریست که ہردو قریب
قریب از یک قبیلہ ہستند و علے ہذا ام السحر و قاطع الشجر و مانع المطر
مجسّم خبیث و دشمن جان و مال خود و عامۂ خلائق ہستند۔

(حرف د) درین مختصر تحریر گنجائش اظہار دلائل کافی دشوار۔ ورنہ
گوشت خواری و شراب نوشی از روے علم ابدان و علم ادیان و حکمت
و تجارت بہر نوع معیوب است - و صریح مضرت رسان۔ ہر عالمے
را که دعوی خلاف باشد بحث نماید و علے ہذا عامل۔

(حرف ر) معروضہ ہذا بخدمت جمیع بنی نوع انسان است نہ مخصوص
باکدامی ملت و مذہب ہے नान यह पंचायनी बात्ती है و بدانکه
امرنیک در ہر مقام نیک قرار یافتہ است و بد بد۔ خادم شب انند

روایت

ایک شاہزادہ۔ پرستارزادہ نی نی بانوزادہ۔ زنانہ صفت کو
مادری عادت چھوڑانے کے لیئے حکمانے شاہنامۂ فردوسی طوسی
بہ تکرار درس کرایا۔ بالآخر جلسۂ امتحان میں جب کامل التحصیل
شاہزادہ صاحب سے فرمایش ہوئی۔ تو اُسنے اپنا جانی مرغوب
یہی شعر پڑھا ۔ منیژہ منم دخت افراسیاب + معاذ الله مضرعہ

برین عقل وہمت بباید گریست + بلے شعر-گرنہ بیند بروز
شپر چشم + چشمۂ آفتاب راچہ گناہ + اشعار- شنیدم گوسفندے
رابزرگے + رہائی داد از چنگال گرگے + شبانگہ دشنہ برحلقش
بمالید + روان گوسپند از دے بنالید + کہ از چنگال گرگم درربودی
چو دیدم عاقبت خود گرگ بودی +

توضیح قبائح گوشت خواری

۱-جان لوکہ گوشت خوار جو حیوانات ہین - وہ خود بخود کیسے سخت دل
وبیرحم یعنی ظالم مزاج ہوتے ہین مصرعہ بر در مرغ دون دانہ از پیش مور-
۲-خالق نے چار قسم کی خلقت خلق کی ہی- اور اُنکے حسب حال چار قسم
کی غذا- انسان غذا غلہ مخصوص جو जव !! بادہ گاؤ واسپ وفیل
وغیرہ غذا چوب نباتات- یعنے کاہ وغیرہ !! شیر وبھیڑیا وگربہ وبعض
پرند وغیرہ غذا گوشت !! خوک وسگ وزاغ وغیرہ غذا چرک विष्टा
!! جو قدرتی حکم رازق کے خلاف رزق کھاتا وپیتا ہی- وہ مجرم برابر
سزا کی تکلیفات سخت سخت عاقبت مین نہین دنیا ہی مین مثل
عوارض جذامی- وکثرت عیال وقلت آمدنی- وبسر کرنا با قبیلہ
تندخو وجنگجو وغیرہ- جھیلتے ہین- اُسکی تامتہ صراحت کی اِس مختصر
مین گنجایش نہین- اور ہر اتمام حجت منحصر ہی رویدا د اعتراض پر-
قطعہ چار طبع مخالف وسرکش + چند روز بوند باہم خوش + چون
یکے زین چہار شد غالب + جان شیرین بر آید از قالب + -

۳- مسلمانان बमन غیر ہنود بوجہ حرام گوشت سے پرہیز کرتے ہین
اور اُسپر علانیہ ادنےٰ واعلےٰ عامل ہین- مگر ہنود ظاہری غیرت کا
بھی پاس نہین کرتے- نقیر دریوزہ گر دونون فریق ضدین
ہین سے کسکو حرام خور اور کسکو حلال خور سمجھے- اور उपेक्षनीय
مسلمانون نے بُرا کیا کہ اپنا ولایتی رواج جو اُنکے سلف سے جاری ہے
شادی بیوگان بند کر دیا-

۴- مثلاً قوم کایستھ کہ منقسم بر دوازدہ القاب ہین بعض اقوام اُنپر
الزام رذالت मूढ़ता غیر واجب و متعصبانہ لگاتے ہین-
ہان علانیہ اِس قوم مین گوشت خواری اور شراب نوشی بالضرور
ایک ذلیل تر اور غیر واجب طریقہ جاری ہے- بعض فرقہ کایستھ
(مثل بھٹ ناگر و ماتھر) کی عورات اس اغذیہ رذیہ سے آزاد
ہین آفرین ہے (بھلا تخم نیکی و زمین نیک تو نابود نہین) اور
بجاے اِسکے بجے حمیت یا نا محتاط مردان و عورات پر نفرین- ورنہ
اس قوم کایستھ کے بعض طریق قابل مدح ہین- جیسے قطعاً انسداد
دختر فروشی وغیرہ- اور بجاے فضولی اسراف کے اِنکو میانہ روی کا
سبق لینے کی ضرورت ہے- اور علی ہذا برہمنون اور چھتریون اور
بیسون اور شودرون کو اپنی اپنی اوضاع کی اصلاح از روے
دھرم شاستر کرنا ضرورت ہے کیونکہ ہر ایک جادہ دھرم سے منحرف
نظر آتا ہے اور یہ الزام دارین ہے جسکی جزا انواع تکالیف و رسوائی

ویرانی نی ہی- فی الجملہ جمیع برن اور اسرم सर्वबरागी ग्रस्त کو اپنی حالت
کی اصلاح کی زمانۂ حال مین اشد ضرورت ہی یہ بلا تصنع امر ہی- ہر بدنامی قومی
کی اصلاح کرنا ہی مردی مردان ہی- ای مردان بکوشید تا جامۂ زنان نپوشید-
۵- ہر قوم اور ہر فرقہ کو واجب ہی کہ خالق سے ڈرین- اور ہر وقت پیش نظر
موت سے اندیشہ کرین- اور اپنے اپنے ملت اور مذہب کے بموجب راست
قواعد پر چلین- اور درمیان مین جو شہوت پرستون نے کلمات کذب
شامل کیے ہین یا نو ایجاد کیے ہین اُنکی تردید کرین بلکہ سعاً چھوڑ دین-
۶- دنیا مین محض دو ہی اصول آمدنی زر ہین- ایک ملکی ایک تجارتی
سو ملکی حق شاہ ہی- اور تجارتی حق رعایا- اور اصل تمام و کمال فروعات
پر حاوی ہی (دیکھو ایک بیل امر بیل अमर बेल کی ہوتی ہی کہ شیر الوجود
ہی- اور وہ بوجہ شدت قوت جاذبہ اُس درخت سے جسپر مسکن ہی-
قوت درخت سے حصۂ اعلےٰ جذب کر لیتی اور بالآخر باعث زوال
اُس درخت کا ہوتی ہی) شعر رعیت چو بیخ است و سلطان درخت؁
درخت ای پسر باشد از بیخ سخت؁ ہر کہ فریاد رسے روز مصیبت خواہد؁
گو در ایام سلامت بجوانمردی کوش؁ ورنہ بقول سعدی شعر ظالمے را
خفتہ دیدم نیم روز؁ گفتم این فتنہ ست خوابش بردہ بہ؁ لا محالا
سرگشتہ و برگشتہ کا سونا جاگنے سے بہتر ہی اور مرنا جینے سے بہتر- اس
دنیا مین سادہ لوح وعظ کرنے والے خیر کے ہشیار مین مثل بیضۂ نقلی کہ
مادۂ طائر در قفس سید ہد لیکن وہ مرد جو عامل خیر ہی فرد در فرد ہی-

خادم عامہ شب انند عفی اللہ عنہ

शवआनन्द.

तथा टीका ॥ शूरपनानाम तीव्रतम तर बीरता जोपुरुषप्रयत्न १ ॥.तेज २ ॥ धीर्य ३ ॥ चतुराई ४ ॥ युद्धमेंपीठदेके भागनान-हीं ५ ॥ उदारता ६ ॥प्रजाकोस्वाधीनरख-ने में समर्थ ७ ॥ यह सात क्षत्रियों के स्वभावंज कर्म धर्म हैं ॥ ४३ ॥

मूल ॥ कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्॥ परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ४४ ॥

(टीका) खेतीकरना ॥ १ ॥ गांय पालना तथा आश्रितकी रक्षाकरना॥ २ ॥ व्योपारकरना ॥ ३ ॥ यह तीनधर्म्म वैश्य के स्वभावज कर्म्म हैं ॥ और पूर्वोक्त तीनों वर्ण की सेवा करना यह एकमात्र धर्म्म शूद्रका स्वभावजकर्महै ॥ ४४ ॥

इति

(तत्त्व) मुख्य यह जानिये कि एक भगवद्गीताही स्वतन्त्रशास्त्रहै)

(अ) फेर चार आश्रम हैं॥ दो प्रवृत्ती में ब्रह्मचर्य्य १॥ गृहस्थ २॥ दो निवृत्तीमें वानप्रस्थ ३॥ संन्यस्त ४॥ औ वर्णाश्रम दोनोंपद के पदार्थ में भेदनहीं बलु परस्पर स्वतः सम्बन्ध है॥ परन्तु शास्त्रोक्त केवल निर्म्मल धर्म्म रीतिकरके अबाधित प्रीतिकरके॥

(इ) हे मनुभगवान्--श्लोक १ अ० ४ गीता--केसम्प्रदायी सर्वमनुष्य अथवा मनुष्यदेशवर्ती आर्य्यजन यथार्थ विनती सुनिये॥ कि जो कोईहो शास्त्र के बिधि अरु निषेधका उल्लंघनकरैगा॥ उसको कालरूप सतगुरु रामकृष्ण बराबर दंड देवैगा॥ यह असमर्थनेम है॥ इसलिये चेतो अरु प्रत्यक्षनिर्भय धर्मात्माबनो॥

(उ) अपनेसे अन्य शरीरों اجسام غیر के अभ्यन्तरजाननेके लिये कोई भारी अधिकार کرامات का प्रयोजनहोतोहो परन्तु सर्व

(६ जम्बूद्वीप هندوستان) सो आर्यावर्त में मुख्य चार वर्ण हैं ॥ १ ब्राह्मण ॥ २ क्षत्री ॥ ३ वैश्य ॥ ४ शूद्र ॥

(निर्णय) सो तीनों गुणों के स्फुरण करके ॥ नाम प्रारब्धी संस्कार के अनुकूल हरएक मनुष्य का स्वभाव होता है जो पात्रत्व عادت جبلي جوظرفيت उन्हींस्वतःस्वभावके अनुकूल ॥ शरीरजोरूप १ ॥ ब्राह्मणादिवर्ण जो नाम २ ॥ क्रिया जो स्वतः प्रकृति के सानुकूल भोजनादि कर्म प्रिय हो ॥ और पात्रत्व के तद्रूप विवेकी सतगुरुमात्र उपदेश देताहै (जैसा कि स्वतः क्षत्री अर्जुनप्रति शाश्वत सतगुरु कृष्णचन्द्रने हठात धर्म्मयुद्धमात्र कर्म ॥

(प्रमाणगीतायांअध्यायअष्टादश) श्री कृष्णार्जुनसम्बाद) ब्राह्मणक्षत्रियविशांशूद्राणांचपरंतप ॥ कर्म्माणिप्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥ तिलकऊपर है ॥

शमोदमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्ज्जव मे-वच ॥ ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म्म स्वभावजम् ॥ ४२ ॥ तिलक प्रमोद बन-बिहार ॥ अन्तःकरणका संयम जो कर्म्म योगाभ्यास ॥ १ ॥ इन्द्रियों का संयम जो मानसी योग ॥ २ ॥ तप ३ ॥ बाह्या-न्तर पवित्रता ४ ॥ क्षमा ५ ॥ सीधा-पना ६ ॥ आत्मबोध ७ ॥ आत्मा अरु परमात्मा की एकताकाबोध (जयतिजय सतगुरु श्रीरघुवीर इसी प्रमोदबनबिहार में देखो--सगुण साम्यारहस्य नाम अ-गम सनेही उपदेश –यह असमर्थ नेम है) ८ ॥ वेद शास्त्र गीतावाक्यों में वि-श्वास ९ ॥ यह नवौ धर्म्म ब्राह्मणों क स्वभाव सिद्धकर्म हैं ॥ ४२ ॥

मूल ॥ शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचा-प्यपलायनम् ॥ दानमीश्वरभावश्चक्षात्रं कर्मस्वभावजम् ॥ ४३ ॥

सो यथार्थ धर्मात्मा ब्रांह्मण और सन्त क्यों नहीं मदिरा मांसभक्षियों का अन्न जल अग्रहण करिकै त्याग देते ॥ अरु क्यों नहीं पशु पक्षी आदि परमात्मा से प्रार्थना करते (जैसे मृत्युदानग्राही महाब्राह्मण) के हिंसात्मकोंके यहां मृत्यु सूतकही हुआकरै जिसमें मदिरा मांस तो हठातनहींहोता (हेअर्यमापितृ महाराज शीघ्रही दयाकरौ ॥ इसीप्रकार मांसाहारी निर्दयी मुसल्मानों ने प्रत्यक्ष सैकरौं अपने आचार्य्यों को मारिडाराहै कारण इसका अधर्मरूपी कामादिहै बलु विशेष्य मांसभक्षण ॥

(ल) हेआर्य्यलोगो इसकुकाल मध्ये यज्ञ तो एक बिवाहमात्र रहगई और यज्ञियां कंगाली करके कि यह पाप का फलहै बन्द ॥ तिन शुभकर्म्म में जो कोई हिंसात्मक कुकर्म्म जो अनेक

जीवोंका बधकरै वह अवश्य मूढ़है वा मूर्ख है ॥ फेर परिणाममें हिंसायुक्त कर्म अपना फल दुःख छोड़ सुखरूप देसक्ता है ॥ क्योंसर्व दुःखी हैं ॥ क्यों सहजसुभाये आत्मघाती अरु अधर्मी बहँकानेवालों को निर्मूल नहीं करदेते ॥ जिसने जिस का मांस खाया वहभी उसकामांस अवश्य-हीखावेगा यह असमर्थनेमहै ॥ रामदशा ॥ ठाढ़भयेउठिसहजसुभाये ॥ ठवनियुवा मृगराजलजाये ॥ (फेर कसाई अरु मांसाहारी दोनों पदका एक पदार्थ है) ॥

(न्ए) क्या पशु आदिकों को बध होते समय दुःख प्रतीत नहीं होता बरांबर होताहै वहभी प्राणधारी हैं ॥ अरु सामग्री मनुष्य पशु पक्षी में तुल्य है (सामग्री जो पांचतत्त्व छठवांनारायण मात्र) जिसकिसीको यह बिनती बिषम भासितहो बराबर बाद करिकै निगराय

मात्र अपने अपने हृदयका शरीर का॥ स्वतः सिद्ध अपनेआप साक्षी है॥ प्रत्यक्ष देखलो अपने अपने हृदय को कि अष्ट पहर विकल रहता है अथवा शान्ती को प्राप्तहै॥ अरु सतगुरु तो सतगुरुमात्रहै.॥

प्रमाणगीतायां॥ क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्व्वक्षेत्रेषुभारत॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानंमतंमम २॥ टीका॥ हे भारत खण्ड मध्ये आर्य्यअर्जुन सम्पूर्ण क्षेत्रों के क्षेत्रज्ञमें॥ मैं गोस्वामी सतगुरु कृष्णही क्षेत्रज्ञ के नाम से स्थितहूं॥ और क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दोनों का सनातन ज्ञानही मेरा उत्तम ज्ञान व स्वरूप है॥ (विशुद्धबोध विग्रहं समस्तदूषणापहं॥ २॥ तद्रूप रामायण जो चेतन को जड़करै जड़हिकरै चैतन्य॥ असससमर्थरघुनायकहिं भजेंजीवतेधन्य॥ श्रीरघुबीरायनमः॥

(ऋ) जैसे श्री महात्मा चित्रगुप्त

(चित्रगुप्त पद का ठीक अर्थ क्षेत्रज्ञ है) बन्शी कायस्थ (कायस्थपद का ठीक पदार्थ क्षेत्रज्ञ है) (तत यह क्षेत्रज्ञ सबन्धी सृष्टी बिचक्षण है श्लोक २ अ० १८ ॥) कि जिनमें द्वादशकोटी हैं ॥ यदपि यह कदापि कदापि शूद्र नहीं तदपि मदिरा मांस ने प्रत्यक्ष इनके आचरण को मलीन अरु दोषित साक्षात्कार करदिया है ॥ कोनकुसङ्गति पाइ नशाई ॥ रहै न नीचमतेगरुआई ॥ १ ॥ अरुनिर्लज्जभी ॥ भला शुभकर्म्म ब्याहादि व बृद्धि सूतक में जब ज्योनार होती है जिस में अशुभमदिरा मांस भी सौंधा होताहै तो सर्व उनका तमाशा देखने आते हैं ॥ अरु यह भले आदमी नशा उतरने पर भी शरमाते नहीं ॥ मदिरा मांस में प्रत्यक्ष सर्वदोष भरे भये हैं ॥ जाको विधिदारुण दुखदेई ॥ ताकीमति पहिले हरलेई ॥ १ ॥

लेवै (कौनलौंड़ीरानीसेकहैकिढांको)फेर अपने अपने शरीरका सर्बको अख्तियार है।।चाहेगधेका हलचलवावै ॥ चाहे किसी से किसीप्रकारकुटवावै चाहे अक्षत तन विष्णु परमपद पालेवै ॥ गोस्वामी तुलसी दास सतगुरु कृष्णका माहात्म्य वर्णन करते हैं ॥ व्याध चितदै चरण मार्‍यो मूढ़मतिमृगजानि ॥ सो सदेह स्वलोक पठयो प्रकटकरि निजबानि ॥ ५ ॥ कौन तिनकीकहै जिनके सुकृत अरु अघदोउ॥ प्रकट पातक रूप तुलसी शरण राख्यो सोउ ॥ ६ ॥ २१४ ॥

देखो इसी सतगुरु कृष्ण का कृष्ण स्वरूप निजवाक्य और परम नेम रूप गीताशास्त्रहै ॥ रामआचरण कृष्ण उपदेश ॥ बसिये सदा मगनानन्द देश ॥ १ ॥ यही मगनानन्द श्री रघुबीर है मम गोस्वामीहै ॥

(ओ) जैसे जगत्में धन उपार्जन के दोही मात्र द्वारा हैं ॥ एक मुलकी जो राजानामक्षत्रीं के योग्य ॥ दूसराब्योपारी नाम तिजारती जो बैश्यादिक प्रजा के योग्य ॥ सो इसमें भी जबरा लोगों की जबरई अरु निबरालोगोंकी निबरई (नाम अधिकार शून्यता) ने अन्धाधुन्द करदियाहै जिसकाफल सर्बमात्र भोगते और बराबर भोगेंगे ॥

यादराखो काल दण्डलिये शिरके ऊपर तैयार खड़ा है ॥ १ ॥ सर्बज्ञ परमात्मा विवेकी दयालु है ॥ २ ॥ यथा राजा तथा प्रजा है ॥ ३ ॥ सो दोनों में पितापुत्रवत् सम्बन्ध है ॥ परन्तु कबतक जबतक धर्म मात्र का बर्त्ताव हो और एक अधर्महीतो सर्वसदुःखों का मूलशोचनीयहै ॥ हितअनहितपशुपक्षिहुजाना॥ मानुषतनगुणज्ञाननिधाना ॥ १ ॥

देखलो आदि अन्त मध्यकी परीक्षासर्व शास्त्र में كتب تواريخي कि यह कथा विस्तार पूर्वककथितहैं ॥ और सोशास्त्रका प्रयोजन क्या सगुंण उपनिषद्रूप अपना अपना शरीरहै अरु जगत्मात्र भी ॥

مصرعه-آري طريق دولت چالاكي است و چستي

(अं) जो मनुष्य पशु पक्षी वृक्षादि कोई जड़चेतन को व्यर्थ सतावेगा ॥ वह पापका फल दुःख रोग निन्दा निर्धनता ॥ अथवा संन्यासी अशान्ति जो मूला शोंचनीय ॥ लोक परलोक में पावैगा ॥

قطعه-شنيده ام كه زقصاب گوسپندى گفت * دران زمان كه زخنجر گلوى او ماليد * سزاے هرخس و خارے كه خورده ام ديدم * كسيكه پهلوى چربم خورد چه خواهد ديد *

यह झूठाढकोसलानहोय। भलाअपने अपने शरिर में अपने अपने घरमें अपना अपना समाचार विचारपूर्वक प्रत्यक्ष देखलो ॥ कोईका कोईकर्म कदापि निष्फल होनहींसक्ता और भगवत् सत्गुरु

रामकृष्ण कदापि भोसरनहोइ(क्कहौगड़-रियागौहानकीखबर) सतशास्त्र सत आचरण जो संनातन धर्मछोड़ कदापि रीझेगा नहीं ॥ और जितने धर्म कर्म विरोध कामियों ठगों अथवा राह भूलों ने कपोल कल्पित रच रचाय के नवीन नवीन पंथादिक चलाये हैं वह नकली मोती के तरह तुच्छ हैं उसका फल निष्फल श्रममात्र है जैसे बधिया बैल अथवा जैसे खेत मध्ये । प्रमाण गीतायांअध्यायसप्तदश ॥ यजन्ते धुखार सात्विकादेवान् यक्षरक्षांसिराजसाः ॥ प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्तेतामसाजनाः ॥४॥ अशास्त्रविहितंघोरं तप्यंतेयेपतो जनाः ॥ दम्भाहंकारसंयुक्ताःकामराग बलान्विताः ॥ ५ ॥ कर्षयन्तःशरीरस्थंभूत ग्राममचेतसः॥मांचैवान्तःशरीरस्थंतान्वि द्धयासुरनिश्चयान् ॥ ६ ॥ अ० १७ ॥

(क) यदपि कलसेकतेसूत्र और कलके बुनेबस्त्र के निस्बत ॥ बिनाकलकाकता सूत्र अरु बिन कलका बुनाबस्त्र ॥ अति शुभ अरु लाभवालाहै ॥ तदपि कादर लोग कादरताकेबन्धकत्वसे ॥ नहानि को त्याग ॥ न लाभको ग्रहण ॥ करसके हैं ॥

(ख) अनेकजाति के लोन जो अब बरतेजाते हैं उनमें एक लाहौरी निमक तो शुद्धहैं और सर्व अशुद्ध और रोग शोक के देनेवाले हैं ॥ देखो करीब करीब सर्व मनुष्य ॥ उदर १ ॥ धातु २ ॥ कफादि ३ ॥ के बिकार में कशित हैं ॥ हाय बाल्यावस्थाके बालक तक ॥ तिसपर कम्बखत निजाकत ॥ परन्तु जो न कानसे सुने न आंखिसे देखे उसका क्या इलाजहै ॥ हां प्रारब्धमात्र कादरोंका आधार मौजूद है ॥ जैसा सूगाप्रति सेमर का फूल ॥

(ग) नासमुझ लोग सनातन आर्य लोगों के चाल चलन को दोष लगाते हैं तथा नासमुझ आर्य देशवर्ती दोषित मानलेतेहैं ॥ यह उनकी चूकहै । तत्त्वदर्शी लोग अबभी सनातनके विश्वासी रसिक हैं जो निन्दित समर्थ होवै यथार्थ बादद्वारा निगरायलेवे ॥ सो बाद मध्ये केवल अध्यात्मी रीति निगराय देवैगी जोदूधका दूध पानीकापानी प्रतीत होय ॥ गोस्वामीउबाच ॥ जड़ चेतन गुण दोषमय निश्वकीन्हकरतार ॥ सन्त हंसगुणगहैं पय परिहरिबारिबिकार ॥ १ ॥

(घ) कादर लोग हाय कहाने को आर्यावर्त्ती और धारणा में अपने शरीर मात्रके निर्बाह में भी कादर हैं और अधर्मी चाकरादिकों के वशीभूत नाम क्रीड़ामृगहैं ॥ साक्षात् स्वर्गमें नरकभोग करते हैं ॥ पहिले लोग कदापि २ ऐसे

कादर न थे यह प्रमाणीक है अब तो बुझगये ॥

(ङ) इसी काल में जिसे देखो वह अपने को वेदज्ञ अथवा वेदान्ती और निर्गुण ब्रह्मका उपासक ॥ मानता १ बतलाता २ धमकाता ३ है ॥ परन्तु अनुभव गम्य अधिकारके दरशाने या धारणा के धारने में अकुशलही निकलते हैं ॥ क्योंकि अध्यात्म विद्या विदून योगाभ्यास के सिद्धहोही नहीं सक्की ॥ अयोगी ढोल में पोल मात्र है ॥ मेरी दशा ॥ ज्यौं कदली तरुमध्यनिहारत कबहुंननिसरतसार ॥ ज्ञानभक्ति साधनअनेकसब सत्य झूठ कछु नाहीं ॥ तुलसिदास हरिकृपा मिटै भ्रम यह भरोस मनमाहीं ॥ श्रीसतगुरु रघुबीर त्राहि ३ ॥ (तिलक यही तो करामात है कि वेदों के नाम भी न जानते हों कोई वेदका मूल वा टीका भी

प्रमाणीकनदेखाहो अरुवेदान्ती पूज्यहो ॥ शिषधनहरैं पाप नहिं हरहीं तेगुरुघोर नरक महँ परहीं ॥ १ ॥

(च) हे परमात्मदेव भारत खण्ड ऐसे स्वदेश में भी कैसा अन्धेर होरहाहै कि परस्पर सर्व सम्बान्धियों मात्र में (जो गुरु शिष्य, पितापुत्र, पुरुषस्त्री, राजा प्रजा, आदिक) स्वार्थी वा शिकारी मात्र हैं ॥ हां हजारोंकरोड़ों में कोई एक मर्यादा पुरुषोत्तम अव्ययवीर्यमात्र हुआ तो अतिशय कारणरूप जानो ॥ जैसे त्रिलोकमें एकरवि ॥ सो धर्ममणि निर्वीर्य हो भी नहींसक्ती ॥ क्योंकि सतगुरु राम ॥ कृष्ण ॥ रघुवीर ॥ धर्म्ममूर्त्तिहै ॥ गीतायां श्लोक ८ अष्टम अध्यायचतुर्थ ॥

(छ) प्रत्यक्ष सर्वपिता पुत्रों के अधर्म की शिकायत करते हैं राजा दुहाई नहीं सुनता ॥ परन्तु यथार्थ

विचारते नहीं कि क्यों सन्तानको योग्य कालमें कोई धर्मशास्त्र जैसा मनुस्मृति भाषा रामायण भगवद्गीता का मूल वा प्रमाणीक (तिलक जैसा मनभावनी वा प्रमोदवनबिहार) नहीं पढ़ाया ॥ अब पछताये कहाहोत जबचिड़ियां चुनिगईखेत ॥ बालिउवाच ॥ असकौनशठहठकाटिसुरतरुबारिकरैबबूरही ॥

شعر—روزگارم بشد بنادانی من نکردم شما حذر بکنید

अब हे बर्त्तमान भविष्य अधिकारी पिताजनों ॥ (गीता अध्याय ॥ श्लोक॥ पिताहमस्यजगतो माताधातापितामहः ॥ वेद्यंपवित्रमोंकार ऋगसामयजुरेव च ॥) इसीप्रत्यक्ष अनुभवद्वारा स्वतंत्रताबिचारोप्रचारो उपचारो ॥ हे श्रीरघुवीरात्मकबीर रघु ॥

(ज) एकसनातन धर्मवही है जो मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने बराबर

निजधारणाद्वाराधारा है सो अनादिधारा प्रबाहरूपभाषा रामायणमें उदित है पर चमगादुरको नंहीं ॥ यह विद्या बिनय بچشم تام تہذیب و اخلاق सम्पन्नका एकपरिपूर्णकोशहै ॥ सोई कृष्णभगवान्ने अपना चालचलन (किरक्टरबुक) गीतामेंकहा है। जोसिद्धकास्वतः आचरण सोईसाधक को साधनीयहै ॥ अरुजोसिद्धहैसोईसाधु है ॥ तथामनुस्मृति अतिप्रमाणीक धर्मशास्त्रहै ॥ तात्पर्य तिनकेपरस्पर स्वसम्बंध में कोई बिषमभावनहीं ॥ जोबिषमसमझो बराबरशंकाकरो ॥ तत्त्वार्थ प्रबृत्ती निबृत्ती औ दोनों के आचार्योंकी अवधीस्वरूप यहीतीनशास्त्रहैं ॥ उनका साक्षात् आत्मा यह प्रमोदबनबिहारहै ॥ साक्षी श्रीरघुबीर है हे महाबीर दुहाई श्रीरघुबीरहै ॥ परमार्थमें जैसा गीता तैसा ब्योहारमें दुर्गास्तोत्रहै ॥

(भ॰) नहरों نہار करकेजोबिकार और दोष॥ जीवधारी अरु पृथिवी जल अग्नि वायु बनस्पती نباتات आदिक में प्रत्यक्षव्याप्तहैं सो प्रत्यक्षमौजूदहै परन्तु लोभ यथार्थ दर्शनका बाधक बराबरहै। क्षत्री लोभी नहींहोता। बलिहारी शिव दधीचि हरिश्चन्द्र करण बलि युधिष्ठिर॥ अरु ऐसेही अनेक अनर्थहैं॥ कहंलगि कहौं कुचालि कृपानिधिजानतहौ जनमनकी १ यथार्थदर्शी कदापि यथार्थ का खण्डन नहीं करसक्ता और न अयथार्थका प्रतिपादन॥ अरुअयथार्थ कैसाहै॥ कामी गुरू लालचीचेला। नरककुण्डमेंठेलमठेला॥ चाहिये कि राजाप्रजाको स्वपालनकरिके औ प्रजाराजाको स्वआज्ञा अनुगवनकरके शीघ्रहीप्रसन्नकरें अरुसदैव अनर्थ सेडरें॥ तथासुस्थानों के महंतों अरुदेवस्थानों के पुजारी अधर्म्मको छोंड़देवें जो

प्रत्यक्ष अनर्थहै त्राहि त्राहि आरतहरण राजोंको स्वधर्मीबनके प्रजाको स्वधर्मपर चलाना चाही॥ प्रजाके अधर्मका राजा भी भागीहोता है॥ जैसेपशुवध पाप में मांसाहारी भी सौंधाहै॥ इति॥

श्रीरघुवीरं॥

(ञ)शास्त्राध्ययनकास्वधर्म्म طریق میانه

کتب بینی एकान्त स्थान में युक्त आहार बिहार समयमें तखत व पृथिवीपर बैठिकै अरु चित्तको एकाग्रकरिकै तत्त्वदर्शन का मनोरथ करिकै सतगुरु अन्तर्यामी को सुमिरिकै श्रद्धा बिश्वास पूर्वक सतशास्त्रको देखे और॥ मूल पददर्शन १॥ पदार्थदर्शन २॥ तत्त्वदर्शन ३॥ ऐसे कर्म उपासना ज्ञान तीनों शुद्धकरने के अर्थ एक एक श्लोक वा चौपाई वा पद को तीन तीन बारपढ़ै तब बाक्यकी यथायोग्य मूर्ति हृदय में साक्षात्कार

होते होते होगी. ॥ जबसत्संग न मिलै विद्यार्थी सतशास्त्रदेखे ॥ यह योगाभ्यास वत्एकान्त निवासका मूर्तिमान् परिपूर्ण काम बिवेकी सखा है ॥ धन्य है जिसे यह सखाप्राप्तहै ॥ (गीता माहात्म्य) कृष्णउवाच ॥ गीतामेचोत्तमंस्थानंगीता मेपरमाग्रहं ॥ गिताज्ञानंसमाश्रित्यात्रिलो कीपालयाम्यहं ॥ ४८ ॥ तथागीतायां) श्लोक२३, २४ अध्याय षोडश ॥ श्लोक १, २, ३, ४, ५, ६ ॥ अध्यायसप्तदश ॥ जबसुनिपरिहै अनहदबाजा ॥ तबपरजासेहोइहैराजा ॥ यहकारणशब्द है ॥

(ट) अन्नजल विश्रामकी सुधर्म्मविधि طريقت خوردني و نوشيدني و خفتني ॥ उदरके चार भाग अनुमान करे ॥ तिसमें दोभाग स्व-अन्नसतगुरु अर्पित (जैसापूर्वइसी तीसरे काएडनम्बर ३ तीनमेंनियतहै) से पूर्ण करै (गीताअध्यायअष्टादश श्लोक ५१

५२, ५३ ॥) एकभाग कल्पित उदरको शुद्धजलसे॥ चौथाभाग बायुके संचार के निमित्त खालीराखे जिसमें श्वास की संकोचता से ऊभ न हो تنفس ॥ १ ॥ सबसे अच्छा एकवक्त दोपहरका खाना है और क्षुधाकी तीव्रता में अथवा प्राप्तकी संयोक्तामें यदा कदा अनेम भी दोषित नहीं ॥ नेमभी अबाध्यचाही जिसेविवेकी सन्तही जानतेहैं ॥ २ ॥ मिठाई और घी खटाई का लोभ इस मुमुक्षूके शत्रु हैं ॥ ३ और पवित्र सहजा भोजन जो यथालाभ इसके मित्र हैं। फेर शुद्ध प्रीति पूर्वक उदार प्रीतमका दियाभया भोजनतो अतिसुखद है ॥ ४ योग्यता दर्शायके रजोगुणी भोजनलेना गुणोंकाबेचनाहै बर्जितहै ॥ तथादाताको गुणबूझिके तब भीखदेनाबर्जित५॥ अनेक बस्तुका भोजन रजोगुण है ॥ अरुरोटी

दालऐसेकोई समान गुणवालेएकबस्तुका भोजनसतोगुण ॥ ६ ॥ दिनमें भोजनपाय के टहलनेके एकघण्टा पीछे दहिना हाथ ऊपरहो लेटना उचित अरु गर्म्मी की फसलछोड़के दिनमेंसोना बर्जितहै ॥७॥ तथा रात में सोना बामाहाथ ऊपर हो ॥ ८ ॥ सात्विकी को तख्त वा भूमि पर लेटना उचित चारपाईपर बर्जित परन्तु जड़योग रूप नेम नहीं ॥ ९ ॥ सम विषम स्वभाव वाली चीजें एक साथ न खाना ॥ १० ॥ जिसका चौकेमें अधिकार है उससे कोई यथा प्राप्त बस्तुमें कदापि चोरी नहीं करना कपटी चोर रोगी अरु अशुद्ध अरु अकीर्त्तिवान् रहताहै ॥ ११ ॥ पापी के अन्नपाने से मलीनताही होती है ॥ १२ ॥ क्षुधानिवृत्यार्थ मधुकर बृत्ती राखना जैसे माता का स्वक्षीर ॥ १३ ॥ सतोगुण अन्नपरममित्र है उस से विषम

परम शत्रु ॥ १४ ॥ पात्र में जूठन अधिकारीका भाग छोड़ना चाही ॥

(ठ) पानी पीनेमें पित्त स्वभाव वाला भोजनके मध्यमें थोड़ापीवै अरु अन्त में आचमनमात्र ॥ १ ॥ एक घण्टे पीछे समान प्यास निवृत्तिकमात्र पानी शुद्ध ॥ २ ॥ तात्पर्य पानी कमपीना अति उत्तम है ॥ परन्तु नेम क्लेशिद बर्जितहै ॥ शनैः शनैः अभ्यासद्वारा सर्व उत्तम अधिकार लाभ करना उचित है अरु यही सतोगुणी आचरणहै ॥

(ड) रात अरु दिनमें केवल छः घण्टे तक सोना अध्यात्मी धार्मिक नेम है न्यूनाधिक यथार्थ से विषम है ॥ मुख्य समानत्व यथायोग्यतत्त्वहै ॥

(ढ) जैसे सातवेंदिन सर्व राजों की कचहरी सर्व विद्यमानों के पाठशालाओंमें एक दिनकी हठात छुट्टी होती है

यह अति उचितहै सो गुरुबार का ब्रत उचित है ॥

(ण) सचिववैद्य गुरुतीन जो प्रिय बोलहिंभयआश ॥ राज्यधर्म्मतनतीनको होइ बेगही नाश ॥ १ ॥ तथा मोटयोगी वैद्यरोगी शूरपीठी घाउ ॥ कीमियांगर भीखमांगै इन्हैं जनिपतियाउ ॥ १ ॥

(त) स्त्रियों लड़कियों को भी अति हठ करके भाषारामायण पढ़ानाचाही ॥ जहांतकहो सुशील स्त्रीद्वारा अथवा धर्मात्मा यथायोग्य पुरुष द्वारा ॥ व्योहारकधी संदेहितनकरै ॥ जो कामहो ऊँचाशुद्ध ॥ स्त्रियांसदैव परतन्त्ररहैं स्वतन्त्रता इनके लाजका बाधा करनेवालाहै ॥

(थ) मित्र जाँचके करना मित्रमित्र के परस्परका सुखदधर्म वही है जो श्री रामचन्द्रने आदिकिष्किन्धामें सुग्रीवप्रति सम्यक्प्रकट कीन्हहै ॥ रामायण प्रमाणी-

क आचार्यहै॥ उसके बिधिनिषेधके यथार्थ अनुकूल चलना परमधर्म है बिमुखता परमअधर्म॥ यहअसमर्थ नेमहै॥

(७) सातौंद्वीपोंके बीचमें यह जम्बूद्वीपहै तिस जम्बूद्वीपके मध्यमें आर्यावर्त नाम भारतखण्ड है॥ फेर कैसा साम्या रहस्यरूप॥ सूर्यमण्डलमध्यस्थम्स्वरूप॥ यह मुख्यगुरुद्वारा अनूप॥ यह श्रीभारत खण्ड है॥ जैसा कि बिलोचन मध्ये गोलक॥ अरु अलङ्कार नेत्रमध्ये अनुस्वार॥ रामदशा। सेवहिंप्रभु सियअनुजाहिं कैसे॥ पलकबिलोचन गोलक जैसे॥ १॥

हे गोस्वामी श्रीरघुबीर त्राहि त्राहि आरतहरण शरण सुखद रघुबीर॥ तुलसिदासउवाच॥ यहभरतखण्ड समीपसुरसरि थलभलो सङ्गति भली॥

श्रीरामचन्द्र की चर्मदशामध्य उत्तर काण्ड॥ हरणसकल श्रम प्रभु श्रमपाई॥

गयेजहांशीतलअमराई ॥ १ ॥ भरतदीन्ह निजबसनडसाई ॥ बैठे प्रभुसेवहिंसबभाई ॥२॥मारुतसुततहँमारुतकरई। २१ इति॥

अबबिलम्बकेहिकाज बंधैसेतु उतरैकटक ॥ त्राहि ३ ॥ कबहुंकहौंयहरहानिरहूंगो॥ श्रीरघुबीरकृपालकृपासे संतसुभावगहौंगो ॥ १ ॥ विनयपत्रिका ॥ १७२ ॥

सोब्रह्मविद्याकामुख्य शुभगृह एकभारतखंडमात्रहै। जिसका एकशिरा श्रीरामचन्द्रका जन्मभूमि ॥ और एकशिरा कृष्णचन्द्रका जन्मभूमिहै ॥ अरु मध्यामध्य श्रीरघुबीर प्रमोदबनबिहार ॥ फेर दोनोंओरधीरबीरभरतभरतभूतहैं ॥ ऐसा बिचक्षण भरतखंडहै ॥ रामउबाच यद्यपिसबबैकुण्ठबखाना ॥ वेदपुराणबिदितजगजाना ॥ १ ॥ अवधसरिसमोहिं प्रियनहिंसोई ॥ यहप्रसंगजानैकोइकोई २ ॥ उत्तर ॥ अर्जुनका नामभी भरतहै ॥

फेर दोनोंओर श्रीलक्ष्मण, बलदेव, शत्रु-
हन, कपिमहाबीर मूर्तिमान्हृषीकेशहैं ॥
पुरुषप्रयत्नमें बीरासनआसीनहैं ॥ राम
कटाक्षके बशीभूतहैं ॥ इसलिये प्रत्यक्ष
श्रीगोस्वामी रघुबीरद्वारा सर्ब चरणप्रति
असमर्थका अखंड असमर्थ अष्टांगदंडवत्
है ॥ नमोनमस्तेहै ॥ गीतायां ॥ अर्जुन
उबाच ॥ नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धात्वत्प्र-
सादान्मयाच्युत ॥ स्थितोस्मिगतसंदेहः
करिष्येवचनंतव ॥ ७३ ॥ अ० अष्टादश ॥

(शंका) तो क्या और आठखंड
अथवा छः द्वीप अथवा दोलोक यथा-
र्थब्रह्मबिद्यासेखाली हैं ॥ युगलकरजोरे
बिनीतिनिहोरे असमर्थबिनय बराबर
खालीहैं और जिसको है प्रतीतहोता है
सोअनुमानीब्रह्मबिद्याहै अरु यह प्रमा-
णीब्रह्मबिद्याहै ॥ देखिलेहुजोदेखनहारे ॥
समुझनिरहनिकहनितुलसीकी कोऊपा-

लुबिनुबूझै ॥ १ ॥ लखैयहदेशगुरुज्ञामी जिन्होंनेमनसँभाराहै ॥ मगनानन्दगुरु गमकी अलखगतिअपारुवाराहै ॥ तथा मगनानन्दभेदसोपावै जोगुरुमगपगधारा है.॥ तस्मात् यह असमर्थभागवती खना-तननेम है ॥ श्रीरघुवीर सतगुरु प्रत्यक्ष साक्षीहै ॥ प्रकटएकरघुवीररामसोइ ज्यों पटसूत्रनबीना ॥ ५ ॥ १३ ॥ प्रमोदवन-बिहार ॥ शंकरसाखिजोराखिकहौं कछु तोजरिजीहमरौं ॥ जिसको फिरभीशंका होवै वह अपनी किताब पेशकरै ॥

उघरैंअन्तनहोहिनिबाहू ॥ कालनेमि रावणजिमिराहू ॥ १ ॥ हाथ कंगनको आरसीक्याहै ॥

مصرعہ - ہاتھ کنگن کو آرسی کیا ہے

असमर्थका असमर्थ शास्त्र तो गीता भाषा रामायण बिनयपत्रिका तततद्रूप यही प्रमोदबनबिहार है ॥ अरु बिहारी

श्रीरघुवीर है ॥ सूर्यका दीपकद्वारा अवलोकन नहीं बनता ॥ रबिमण्डल देखतलघुलागा ॥ उदयतासु त्रिभुवन तमभागा ॥ १ ॥

समरथकोनहिंदोषगुसाईं । रबिपावक सुरसरिकीनाईं ॥ रामप्रेमभाजनभरत बड़ीनयहकरतूति ॥ चातकहंससराहिये टेकबिवेकबिभूति ॥

श्रीरघुबीरउबाच ॥ परेहंसजेहिकहत सोईतुमभ्रांतिछोरनिर्बानाहै ॥ ३ ॥ सब महँतुहीतुहीमहँसबहै नहिंकहुँ आनाजानाहै ॥ ४ ॥ कहैरघुबीरशरणमस्तानाबुन्द मेंसिन्धुसमानाहै ॥ ५ ॥

प्रकटएकरघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्र नबीना ॥ १ ॥ १३ ॥

असस्वभावकहुंसुनौंनदेखौं । केहि खगेशरघुपतिसमलेखौं ॥ कोईहोतरैन थिनुसेयेममस्वामी । रामनमामिनमा-

मिनमामी ॥ जाकीकृपालवलेशतेमति मन्दतुलसीदासहूं । पायोपरमबिश्राम रामसमानप्रभुनाहींकहूं ॥ सोइगुसाइँ जेहिविधिगतिछेंकी ॥ टारिकोसकहिटेक जेहिटेकी ॥ प्रकटएकरघुवीररामसोइ ज्योंपटसूत्रनबीना ॥

(तिलक करतारकीक्रिया एकबस्तुसूत्र की ओतप्रोतता (नामअनुलोम प्रतिलोम केधारणा जो एराफेरी) सेप्रकट भई जोबस्तुत्व सोई युक्तयोग बस्त्र पदार्थहै ज्योंपटसूत्रनबीना ॥

(१) जो कदापि सूत्रकी ओतप्रोतत्व को सर्वशक्तिमान् करतार क्रियाको उलटके (जो यत्न कल्पना विकल्प)

(जैसे मकरी जारके तारको उगिलके फिर लीललेती है अथवा मकरी कभू अपनें अण्डा मूल द्वारधारीको खालेती

है और कभी अण्डज अपने माताको ॥ तागातागाजलगयो जलोनएकोतागा ॥ घरवालेसबपकरगये घरखिरकीहोकेभा- गा ॥ कृपाडोरिबंशीपदअंकुश परमप्रेम मृदुचारो ॥ यहिबिधिबेधिहरौमेरोदुख कौतुकनाथतिहारो ॥ उधेरडाले तो ग्रन्थि अरु बस्त्रका प्रत्यक्ष अभाव प्रसिद्धहोवै ॥ जड़चेतनहिंग्रन्थि परिगई ॥ यदपिमृषा छूटतकठिनई ॥

(२) और जो करतार पूर्वोक्त शुद्धब- स्त्रको पृथिवीपर बिछाइके प्रत्यक्ष अग्निसे जरायदेवै (ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं त- माहुःपंडितंबुधाः) तो खाकसारबस्त्रका जलाभया रूपतो ज्योंकात्यों प्रतीत होताहै परन्तुअसाध्यहै (निसोतउदासी- न) उसद्वारा कोई क्रिया सिद्धनहीं होसक्ती ॥ अर्थात् प्रत्यक्ष निरीहनाम आकाशवत् चेष्टाशून्यहै (जैसे घृतढुब्बत

माखीयर्दपिजीतीहै तदपि क्रियाजोउड्ड्व
शून्यहै अथवा जैसा भूनाबीजउद्भवक्रिया
शून्यहै. और क्षुधानिवृत्ति क्रिया परिपूर्ण
अथवा जैसा बिवेकी आचार्य यदपि
लेशामायावाला उपदेश समय प्रतीत
होतीहैतदपि मर्यादशून्यहै सर्व शक्तिमान्
है अघट घटनाभी उसीकी स्वतः शक्ति
है ॥ तिसीके आभास्य मिथ्या बासुदेव-
.वत् कोई नकलीनाम रंगेसियारहू हम
असमर्थ सरीखा हैं) तौनकी स्वयं
क्रिया गलित महात्मा विदेह मुक्त वा
त्याग संन्यासी वा ब्रह्म भूत (तीनों
पदका पदार्थ एक है) है सोई महात्मा
अनन्य भक्तिद्वारा सतगुरुकी अहेतुकी
कृपासे प्रसादसे (कबहुंककरि करुणां
नरदेही ॥ देहिईशबिनुहेतुसनेही ॥ १ ॥
अमानी पुत्र हुआ हुआ हुआ ॥ मुख्य
साम्यारहस्यस्वरूप ॥ श्रीरघुवीर प्रमोद

बनबिहारीके गोदमें (जैसी साक्षात् माता तैसीगोद ॥ १ ॥ देखो रामायण अन्त आरण्यकाण्ड ॥ रामउवाच जिमि बालकहिपालमहतारी ॥ गिता कृष्णउ-वाच ॥ पिताहमस्यजगतो माताधाता पितामहः ॥) सदाएकरस विहारकरैं ॥ नित्यानन्द विहारएकरस वृद्धहोइ नहिं क्षीना ॥ सेवतशिवसनकादिकनारद ब्रह्मादिकपरबीना ॥ प्रकटएकरघुवीर रामसोइज्योंपटसूत्रनबीना ॥ ५ ॥ १३ ॥ ताकोसुखसोइजानहीचिदानन्दसन्दोह ॥

(३) तात्पर्य प्रकटएकरघुवीरराम सोइ ज्योंपटसूत्रनबीना ॥ १३ ॥ दे-खिये श्लोक ३४ अध्यायचतुर्थगीता ॥

(४) असमर्थ विनय ॥ गूढ़हुतत्त्व नसाधुदुरावहिं ॥ आरतअधिकारीजहँ पावहिं ॥ इति ॥ समस्तआडम्बरजीवमेंहै और सतगुरुतो विशुद्धबोध विग्रहं स्वयं

प्रसिद्धयुक्तयोगीहि ॥ शाश्वतगुरुहै ॥ सो मोपै कहिजात न कैसे । शाकबणिकमणि गुणगणजैसे ॥ तुलसिदासहरिगुरुकरुणा बिनुविमलविवेकनहोई ॥ बिनुविवेकसंसारघोरनिधिपारनपावैकोई ॥ १ ॥ जेहि विधिहिविधिताहरिहिहरिता शिवहिशिवताजेहिदई ॥ सोइजानकीपति मधुरमूरति मोदमयमंगलमई ॥ १ ॥ सोमैंकुमतिकहौं केहिभांती । बाजसुरागकिगांडरतांती ॥

(५) बन्दौंसन्तसमानचितहितअनहितनहिंकोइ ॥ अंजलिगतशुभसुमन जिमि समसुगंधकरदोइ ॥ १ ॥ संतसरलचितपरमहित जानिस्वभावसनेहु ॥ बालबिनयसुनिकरिकृपा रामचरणरति देहु ॥ २ ॥ हेसाधुदेखियेविनयपत्रिका ॥ २७५ ॥ (द्वारद्वारदीनताकही) ॥ इति ॥

प्रकटएकरघुबीररामसोइज्योंपटसूत्रनबीनां ॥ ५ ॥ १३ ॥

(४) परन्तु दृष्टान्त, युक्ती, प्रमाणीक प्रमाण सहित बचन शोभित है ॥

(५) प्रयोजन तत्त्वार्थ का विचार, उपचार, प्रचारमात्र है ॥

(६) जिन्ह नामी सुजन के नाम पुस्तक विद्रा हुई है ॥ तैसेही उस देश निवासी साधु ब्राह्मण पण्डित विद्यमानमात्र याचक के याच्य अनुभव होवैं ॥

(७) हे स्वकटाक्षात्मक अगम सनेही गोस्वामी श्रीरघुबीर ॥ पाहिमाम् ३ रक्षमाम् ३ रामायण आदि बालकांड शङ्करउवाच ॥ यद्पिमित्रप्रभुपितुगुरुगेहा॥ जाइयबिनुबोलेनसँदेहा ॥ १ ॥ तदपि बिरोधमान जहँ कोई ॥ तहांगये कल्याण न होई ॥ २ ॥ सतीउवाच ॥ संतशम्भुश्रीपतिअपवादा ॥ सुनिय जहांतहँ असमर्यादा १ काटियतासु जीभजुबसाई ॥ श्रवण मूंदि नहिंचलियपराई ॥ २ ॥ प्रकट एकरघुबीर रामसाइ ज्योंपटसूत्रनबीना ५ ॥ १३ ॥

(८) श्रीरघुबीरं ॥ श्रीरामनिजचर्मेउवाच मध्य उत्तरकाण्ड ॥ कोमलचित दीननपरदाया ॥ मनबच क्रम ममभक्तअभाया ॥ १ ॥ सबहिंमानप्रद आपुअमानी ॥ भरतप्राणसम ममतेप्रानी ॥ २ ॥

(यह सन्त असन्तनके लक्षण का सनातनबीजक जानिबेयोग्य है हे तात अपने आपको यथायोग्यहै हे

तात अपने आपको यथायोग्य जानलो पञ्चायती समाचार पक्षपातबिवर्जित है)

(९) श्रीराम परंचर्मउवाच ॥ तथा ॥ इहितनकर फल विषयनभाई ॥ स्वर्गहुअल्पअन्त दुखदाई ॥ १ ॥ ताहिकयहुंभलकहैनकोई ॥ गुंजागहैपरसमणि खोई ॥ जो न तरै भवसागरहिं नरसमाजअसपाइ ॥ सोकृत निन्दकमन्दमति आतमहनगतिजाइ ॥ १ ॥ ५० ॥ श्रीरामचन्द्र के बचन पूर्वोक्त ८, ९ ॥ सगुण हुजूरी साम्यारहस्य स्वरूप हैं ॥ साखीपवनपूत सपूत विजयद पुरानभूत हैं ॥

(१०) असमर्थ अनुगामीविनय ॥ यह भरतखंड समीप सुरसरि थलभलो सङ्गति भली ॥ ३ ॥ विनय १३५ ॥ समुझनिरहनिकहनितुलसी की को कृपालु बिनुबूझै ॥ पाहि ३ रक्ष ३ हे उदित नररूप हरि गोस्वामी श्रीरघुबीर ॥ शिवानन्द ॥ करछायलके सांग को पैठिजमावतकौन ॥ तौन तौन तौन ॥

(११) सगुण साक्षी बलिहारी मन्त्रभूत श्रीरघुबीर है ॥ अवजानन्तिमांमूढामानुषींतनुमाश्रिताः परं भावमजानन्तोममभूतमहेश्वरम् ॥ अध्याय ॥ असमर्थ अनुगामी शिवानन्द ॥

इति ॥